जगजीवन साहब की बानी

[जीवन चरित्र सहित]

पहिला भाग

मुद्रक एवं प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद–२

१६८२]

[मूल्य ६ रु०

जगजीवन साहब की बानी

पहला भाग

जिसमें

उन महात्मा के अति मनोहर और उपकारक पद
चार अंगों के मय जीवन-चरित्र बड़े
जतन से शोध कर गूढ़ शब्दों और
कड़ियों के अर्थ व संकेत
सहित छापे गये हैं।

प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद।

चौथा संस्करण]   सन् १९७६ ई०   [मूल्य

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan
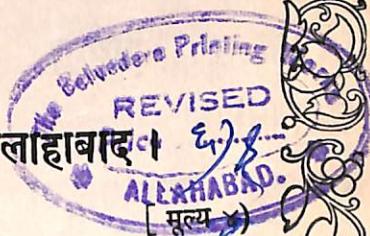
जीवन-चरित्र

वीरू साहब (दिल्ली)

|

यारी साहब

|

बुल्ला साहब (भुरकुड़ा, ज़िला ग़ाज़ीपुर)

|

जगजीवन साहब — गुलाल साहब

|

दूलमदास साहब — भीखानन्द साहब

|

गोबिन्द साहब (अहिरौली, ज़िला फैजाबाद)

|

पलटू साहब (अयोध्या)

॥ अंगों का सूचीपत्र ॥

जगजीवन साहब का जीवन-चरित्र

जगजीवन साहब जाति के क्षत्री थे और सरहदा गाँव में जो बाराबंकी (अवध) के जिले में सरजू नदी के किनारे कोटवा से दो कोस की दूरी पर बसा है जन्म लिया था। ठीक समय इन के जन्म और मरन का मालूम नहीं होता लेकिन हिसाब करने से अनुमान दो सौ बरस पहिले उनका प्रगट होना और १४० बरस गुप्त हुए होना पाया जाता है। इसका प्रमान पादरी जान टामस के लेख से भी मिलता है जिन्होंने लिखा है कि जगजीवन साहब ने सत्तनामी मत को चलाया और बिक्रमी संबत १८१७ मुताबिक ईसवी सन १७६१ में ज्ञान प्रकाश नामी ग्रंथ लिखा। इस हिसाब से उस ग्रंथ को रचे १४७ बरस हुए। पादरी साहब ने जगजीवन साहब की जाति खत्री लिखी है पर यह भूल जान पड़ती है उन्होंने क्षत्री को खत्री समझा।

जगजीवन साहब के पिता खेती करते थे और लड़कपन में जगजीवन साहब अपने बाप के गाय बैल चराया करते थे परन्तु बाल अवस्था ही से इन के चित्त का संसारी कामों से हटाव और परमार्थ की ओर झुकाव था और साधुओं का संग जहाँ तक अवसर मिलता करते थे। एक दिन एक पूरे फ़क़ीर बुल्ला साहब मय एक महात्मा गोबिंद साहब के (जो पलटू साहब के गुरू थे) जिस मैदान में जगजीवन साहब चौहे चरा रहे थे पहुँचे और उनसे चिलम चढ़ाने के लिये आग माँगी। जगजीवन साहब तुरत अपने घर दौड़ कर गये और आग लाये और उसी के साथ दोनों महात्माओं के पीने को दूध भी लेते आये, पर जी में डरते थे कि बाप को मार न पड़े। उनके चित्त की यह दशा देख कर बुल्ला साहब ने हँस कर दूध ले लिया और बोले कि डरो मत हम लोगों को देने से तुम्हारे घर का दूध घटा नही बरन बढ़ गया। जगजीवन साहब अचरज में आकर उलटे पाँव घर को लौटे तो क्या देखते हैं कि दूध का बरतन नकानक भर कर उबल रहा है और सारे घर में मानों दूध की नदी बह रही है। जगजीवन साहब उन साधुओं के पीछे दौड़े जो वहाँ से चल दिये थे और कुछ दूर जाकर उनको पकड़ा और प्रार्थना की कि हम को मंत्र उपदेश करके अपना चेला बनाइये। बुल्ला साहब ने जवाब दिया कि कान में मंत्र फूकने की ज़रूरत नहीं है और साथ ही उन पर ऐसी दया की दृष्टि डाली कि जगजीवन साहब की दशा कुछ और ही हो गई और गहरा प्रेम और बैराग जाग उठा। फिर बुल्ला साहब बोले कि हम केवल तुम को चिताने के लिये आये थे तुम पिछले जन्म के बड़े अभ्यासी हो अब थोड़े ही दिन के अभ्यास से तुम्हारा जोग पूरा हो जायगा। जगजीवन साहब ने उन के चरनों पर गिर कर प्रार्थना की कि कोई चिन्ह अपना देते जाइये जिस पर बुल्ला साहब ने अपने हुक्के में से एक काला धागा और गोबिंद साहब ने अपने हुक्के में से सफ़ेद धागा तोड़ कर उन की दहनी कलाई पर बाँध दिया। यह चाल दहनी कलाई पर काला और सफेद धागा बाँधने की जगजीवन साहब के पंथ वालों में जो सत्तनामी कहलाते हैं अब तक जारी है और इस दोरंगे धागे को आँदू कहते हैं।

फिर तो जगजीवन साहब तन मन की सुद्ध बिसार कर अभ्यास और भक्ति में लगे और दूर-दूर से लोग उनके दर्शन और उपदेश लेने के निमित्त आने लगे। यह महिमा उनकी देख कर गाँव वालों को ईर्षा पैदा हुई और उनको सताने का कोई जतन उठा नहीं

रक्खा। जगजीवन साहब उनसे पीछा छुड़ाने के लिये सरदहा गाँव को छोड़ कर कोटवा में जा रहे। कहते हैं कि उनके जाते ही सरदहा गाँव को सरजू नदी बहा ले गई।

कोटवा में जगजीवन साहब की समाध और सातवीं गद्दी अब तक मौजूद है और हर साल उन के पंथ वालों और साधारन लोगों का बड़ा भारी मेला होता है पर और पुराने मतों की तरह इस में भी अब सच्चे अभ्यासी देख नहीं पड़ते।

जगजीवन साहब गृहस्थ आश्रम में थे। उन के विषय में चमत्कार प्रसिद्ध हैं जिनमें से एक यह है कि उन की लड़की का ब्याह राजा गोंडा के लड़के से ठहरा। जब बरात आई समधी ने बिना मांस के भोजन करने से इनकार किया। इस पर जगजीवन साहब ने मौज से बैंगन की तरकारी बनवा दी जिसे सब बरातियों ने मांस समझ कर बड़ी रुचि से खाया। इसी कारन उसके पंथ वाले बैंगन को मांस के तुल्य समझकर उसको नहीं खाते।

जगजीवन साहब पूरे संत थे जिन की ऊँची गति उनकी बानी पुकारती है। संम्पूर्ण बानी रत्न-जटिल है जिस के अंग अंग से भेद, दीनता और प्रेम टपकता है और पाठ करने से चित्त गद्‌गद होकर प्रेम के घाट पर आ जाता है। इनके गुरू बुल्ला साहब की बानी बड़े ऊँचे घाट की और अत्यन्त कोमल है जो छप गई है।

जगजीवन साहब का अति मनोहर ग्रंथ शब्द-सागर है जिस का पहिला भाग यह है जो दो लिपियों से मिलान करके अंगों के क्रम अनुसार भरसक बहुत शुद्धता के साथ छापा गया है। दूसरा भाग भी जिस में और और अंग हैं छप गया है।

इस के सिवाय पादरी जान टामस लिखते हैं कि जगजीवन साहब के दो ग्रंथ ज्ञानप्रकाश और महाप्रलय और हैं। इन ग्रंथों को हमने नहीं देखा है। पहिली पुस्तक के विषय में पादरी साहब कहते हैं कि वह महादेव और पारवतीजी के बीच प्रश्नोत्तर के रूप में है पर उस का विषय क्या है यह नहीं बतलाया—ज़ाहिर में जैसा कि नाम से जान पड़ता है ज्ञान पर सम्बाद होगा। दूसरी पुस्तक में इस तरह चर्चा की है कि भक्त जन सब के बीच में रह कर सब से अलग है, वह सब जानता है किसी से पूछने का मुहताज नहीं है वह न जनमता है न मरता है न सीखता है न सिखाता है, न रोता न पछताता है, उस को न दुख व्यापता है न सुख, न न्याय न अन्याय, इत्यादि—फिर पूछा है कि ऐसे पुरुष का कोई पता बतला सकता है।

जगजीवन साहब के गुरमुख चेले दूलमदास जी थे जिन का नाम प्रसिद्ध है।

श्रीमहन्त राजारामजी बड़ागाँव ज़िला बलिया की कृपा से हम को जगजीवन साहब के गुर-घराने की बंशावली का वृक्ष मिला है जो यहाँ छापा जाता है। उससे जान पड़ेगा कि कैसे-कैसे भारी भक्त और महात्मा इस गुर-घराने में हुए हैं, और पलटू साहब जिन की अद्भुत कुंडलियाँ और शब्दावली हम छाप चुके हैं और भीखा साहब जिन की शब्दावली भी छप गई है इसी घराने के थे।

नोट :—वंशावली तथा सूची भीतरी टाइटिल पेज के पीछे देखिये।

जगजीवन साहब की बानी

बिनती और प्रार्थना

॥ शब्द १ ॥

सतगुरु मैं तो अहौं तिहारा ।
पूजा अर्चा नाहीं जानों, जानों नाम पियारा ॥ १ ॥
सो हित सदा होत नहिं अनहित, बास किहे संसारा ।
कहत हौं दीन लीन रहों तुम तें, तुम ब्रत राखनहारा ॥ २ ॥
अंतर ध्यान गगन ह्वै मगना, निरखौं रूप तिहारा ।
पुहुप गूँधि के माला लैके, सो पहिराओं हारा ॥ ३ ॥
पान चून औ खैर सुपारी, गरी जायफर डारा ।
कपुर लाइची मेरिया[1] वा में, पूजा यही हमारा ॥ ४ ॥
कटहर कोआ मेवा लायों, सोऊ पवावौं[2] प्यारा ।
कनक नीर कर ते मुख धोओं, तकि के चरन पखारा ॥ ५ ॥
सो चरनामृत नित्त पियो है, सुभ भा जन्म हमारा ।
जगजीवन को दिहे रहहु यह, दाता होहु हमारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द २ ॥

प्रभु गति जानि नाहीं जाइ ।
अहै केतिक बुद्धि केहि महँ, कहै को गति गाइ ॥ १ ॥
सेस सम्भू थके ब्रह्मा, बिस्नु तारी लाइ ।
है अपार अगाध गति प्रभु, कहूँ नाहीं पाइ ॥ २ ॥
भान गन ससि तीनि चौथौ, लियो छिनहिं बनाइ ।
जोति एकै कियौ बिस्तर, जहाँ तहाँ समाइ ॥ ३ ॥
सीस दैकै कहौं चरनन, कबहुँ नहिं बिसराइ ।
जगजीवन के सत्य गुरु तुम, चरन की सरनाइ ॥ ४ ॥

---

(१) मिलाया । (२) खिलाऊं ।

॥ शब्द ३ ॥

तुम ते कहै को बारम्बार।
जानिये हित आपनो, मो राखिये दरबार ॥ १ ॥
टरौं ना मैं करहुँ सेवा, कठिन माया जार।
समुझि सो डर होत निसु दिन, तारु अब की बार ॥ २ ॥
नहीं गुन कछु अहै एकौ, औगुन अधिकार।
करहु माफ गुनाह जैसे, मातु पालत बार[1] ॥ ३ ॥
जात जानी दर्यात[2] अब, प्रभु मोहिं है इतबार।
जगजीवन निरबाहिये, प्रभु जवन कीन करार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

महिं ते करि न बंदगी जाइ।
सुद्धि तुमहीं बुद्धि तुमहीं, तुमहिं देत लखाइ ॥ १ ॥
केतनि हौं गनती में केती, कहि न सकौं बनाइ।
चहे चरन लगाइ राखौ, चाहिये बिसराइ ॥ २ ॥
देवता मुनि जती सुर सब, रहे तारी लाइ।
पढ़ै चारिउ बेद ब्रह्मा, गाइ गाइ सुनाइ ॥ ३ ॥
भस्म अंग लगाइ संकर, रहे जोति मिलाइ।
कौन जानै गति तुम्हारी, रहे जहँ तहँ छाइ ॥ ४ ॥
जानिये जन आपना मोहिं, कबहुँ ना बिसराइ।
जगजीवन पर करहु दाया, तबहिं भक्त कहाइ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अब मैं कवन गनती आउ।
दियो जबहिं लखाइ महिं कहँ, तबहिं सुमिरौ नाउ ॥ १ ॥
समुझि ऐसे परत मोहिं कहँ, बसे सरबस ठाउँ।
अहो न्यारे कहूँ[3] नाहीं, रूप की बलि जाउँ ॥ २ ॥

---

(१) बालक। (२) दात, बखशिश। (३) कभी।

नाम का बल दियो जेहि कहँ, राखि निर्भय गाउँ।
काल को डर नहीं उहवाँ, भला पायो दाउँ ॥ ३ ॥
चरन सीसहिं राखि निरखो, चाखि दरस अघाउँ।
जगजीवन गुर करहु दाया, दास तुम्हारा आउँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

अब मोहिं जानु आपन दास ॥ टेक ॥
सीस चरन में रहै लागो, और करौं न आस।
दियो मोहिं उपदेस तुमहीं, आइ तुम्हरे पास ॥ १ ॥
लियो ढिग बैठाइ कै जग, जानि सबै निरास।
भला है अस्थान अम्मर, जोति है परगास ॥ २ ॥
करौं बिनती बहुत बिधि ते, दीजिये विस्वास।
गति तुम्हारी कौन जाने, जगजीवन है दास ॥ ३ ॥

॥ शब्द ७ ॥

बिनती लेहु इतनी मानि।
कहौं का कहि जात नाहीं, कवन अहौं केतानि ॥ १ ॥
कियो जबहीं दया तुमहीं, लियो संतन छानि।
रूप नीक लखाय दीन्ह्यो, होत लाभ न हानि ॥ २ ॥
रहत लागे सदा आगे, सब्द कहत बखानि।
लागि गा सो पागि गा, पुनि गगन चढ़ि ठहरानि ॥ ३ ॥
निरमल जोति निहारि निरखत, होत अनहद बानि[1]।
जगजिवन गुरु की भई दाया, लियो मन महँ छानि ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

साँई को केतानि गुन गावै।
सूझि बूझि तस आवै तेहि का, जेहि का जौन लखावै ॥ १ ॥
आपुहि भजत है आपु भजावत, आपु अलेख लखावै।
जेहिं कहँ अपनी सरनहिं राखै, सोई भगत कहावै ॥ २ ॥

---

(१) बानो।

टारत नहीं चरन ते कबहूँ, नहिं कबहूँ बिसरावै।
सूरति खैंचि ऐंचि जब राखत, जोतिहिं जोत मिलावै॥ ३ ॥
सतगुर कियो गुरुमुखी तेहिकाँ, दूसर नाहिं कहावै।
जगजीवन ते भे संग बासी, अंत न कोऊ पावै॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

अब मैं करौं कौन बयान।
चहौ पल में करहु सोई, होय सो परमान॥ ॥ १ ॥
सहस जिभ्या सेस बरनत, कहत बेद पुरान।
मोहिं जैसो करहु दाया, करहुँ तैसि बखान॥ २ ॥
संतन काँह सिखाइ लीन्ह्यो, कहत सोई ज्ञान।
लागि पागि के रहे अन्तर, मस्त रहत निर्बान॥ ३ ॥
रहे मिल तुम्ह नहीं न्यारे, कबहुँ नहिं बिलगान।
जगजीवन धरि सीस चरनन, नहीं भावै आन॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

अब मैं कहौं का कछु ज्ञान।
बुद्धि हीनं सुद्धि हीनं, हौं अजान हैवान॥ १ ॥
ब्रह्म सेस महेस सुमिरत, गहै अन्तर ध्यान।
संत तंते रहत लागे, कहत ग्रंथ पुरान॥ २ ॥
जोति एकै अहै निर्मल, करै सबै बयान।
जहाँ जैसे भाव आहै, भयो तस परमान॥ ३ ॥
करौ दाया जानि आपन, नहीं जानहुँ आन।
जगजीवन दास सत्य समरथ, चरन रहु लिपटान॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

साँईं मैं नहीं कछु जाना॥ टेक॥
बाल बुद्धि कछु नाहिं जान्यो, रह्यो सदा हैवाना।
करि कुसंग कुमारग डोल्यो, निसि बासर अभिमाना॥ १ ॥

नहिं मति मोरि कहौं मैं कहँ लगि, तुम सब कृपा-निधाना ।
मोहिं सिखाइ पढ़ाइ दृढ़ावहु, तबहि धरौं मैं ध्याना ॥ २ ॥
मैं बपुरा केतनि किन माहीं, करि नहि सकौं बखाना ।
जगजीवन पर दाया करिये, गुरु निरखै निरबाना ॥ ३ ॥

॥ शब्द १२ ॥

साँईं जब तुम मोहिं बिसरावत ।
भूलि जात भौजाल जगत माँ, मोहिं नहीं कछु आवत ॥ १ ॥
जानि परत पहिचान होत जब, चरन सरन लै आवत ।
तब पहिचान होत है तुम ते, सूरति सुरति मिलावत ॥ २ ॥
जो कोइ चहै कि करौं बंदगी, बपुरा कौन कहावत ।
चाहत खैंचि सरन ही राखत, चाहत दूरि बहावत ॥ ३ ॥
हौं अजान अज्ञान अहौं प्रभु, तुम ते कहि कै सुनावत ।
जगजीवन पर करत हौ दाया, तेहि ते नहिं बिसरावत ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

प्रभुजो का बसि अहै हमारी ।
जब चाहत तब भजन करावत, चाहत देत बिसारी ॥ १ ॥
चाहत पल छिन छूटत नाहीं, बहुत होत हितकारी ।
चाहत डोरि सूखि पल डारत, डारि देत संसारी ॥ २ ॥
कहँ लहि बिनय सुनावौं तुम ते, मैं तो अहौं अनारी ।
जगजिवन दास पास रहै चरनन, कबहूँ करहु न न्यारी ॥ ३ ॥

॥ शब्द १४ ॥

बंदा कौन बंदगी करई ।
रात दिवस मिलि करै बंदगी, जो पै कबूल न परई ॥ १ ॥
चाहत है मैं रहौं चरन ढिग, दृढ़ ह्वै धरनो धरई ।
साँईं चहत मोर है नाहीं, दूर दूर ह्वै रहई ॥ २ ॥
जोगी जती मुनि जब सब थाके, करि कै तपस्या मरई ।
नाहीं हित करि जानत आपन, नाहिं काज कछु सरई ॥ ३ ॥

आपु बंदगी करत करावत, जेहिं पर किरपा करई ।
जगजिवन दास बिनती करि, बिनवै सीस चरन तर धरई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

प्रभु जी तुम जानत गति मेरी ।
तुम ते छिपा नहीं आहै कछु, कहा कहौं मैं टेरी ॥ १ ॥
जहँ जहँ गाढ़ पर्‌यो भक्तन कां, तहँ तहँ कीन्ह्यो फेरी ।
गाढ़ मिटाय तुरन्तहि डार्‌यो, दीन्ह्यो सुक्ख घनेरी ॥ २ ॥
जुग जुग होत ऐसे चलि आवा, सो अब साँझ सबेरी ।
दियो जनाय सोई तस जानै, बास मनहिं तेहि केरी ॥ ३ ॥
कर औ सीस दियो चरनन महँ, नहिं अब पाछे हेरी ।
जगजीवन के सतगुरु साहब, आदि अंत तेहि केरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १६ ॥

प्रभु बिन किरपा भक्ति न होय ।
कर्म अघ तेहि मेटि डार्‌यो, मंत्र सिखयो सोय ॥ १ ॥
तिरथ बरतं करि तपस्या, डारि यहु तन खोय ।
नाहिं लाहत नाम रस बहु, नाहिं दृढ़ता होय ॥ २ ॥
कोटि तीर्थ अस्नान करि के, सैन रहे समोय ।
ऐस करि के बिचार नाहीं, रहे मन मन रोय ॥ ३ ॥
पढ़ि पुरान गरंथ गीता, बकत कीरति सोय ।
नहीं अजपा डोरि लागै, भक्ति कैसे होय ॥ ४ ॥
हो दयाल निहाल कर मोहिं, दूजा नाहिन कोय ।
जगजीवन को चरन गुरु के, नहीं न्यारा होय ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

प्रभु जो बुद्धि मोहिं केतानि ।
दया जब तुम कीन मो पर, कह्यौ ज्ञान बखानि ॥ १ ॥
भ्रमत रह्यौ अपंथ मारग, पर्‌यो जाही जानि ।
कहाँ लहि मैं कहौं औगुन, महा अघ की खानि ॥ २ ॥

मेटि सकल गुनाह औगुन, सरन लीन्ह्यो आनि।
जानि हित करि आपना मोहिं, और नाहीं मानि ॥ ३ ॥
कहत हौं कर जोरि सुनिये, मोरि अन्तर जानि।
जगजिवन दास तुम्हार आहै, तुमहिं लियो पहिचानि ॥ ४ ॥

॥ शब्द १८ ॥

मैं तो दास तुम्हार कहावौं।
तुम तजि और न जानौं कोई, औरै सीस न नावौं ॥ १ ॥
चरन तुम्हारे लागि रहौं मैं, और सबै बिसरावौं।
तुमहीं ते निरबाह हमारा, तुम्हरी कीरति गावौं ॥ २ ॥
चलौं दीनता ह्वै कै सब ते, नाहिं बिबाद बढ़ावौं।
जो कोइ कीन[1] जानि है मोहीं, तेहि का दूरि बहावौं ॥ ३ ॥
आदि अन्त का आहौं संगी, त्यागि न अन्तै धावौं।
जब तुम खुसी सुचित्त होत हौं, तब मैं सुरति मिलावौं ॥ ४ ॥
अपने अपने रँग रस माते, केहि केहि राह लगावौं।
जगजीवन गुरु चरनन परि कै, नाहीं सीस उठावौं ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

साईं इतनी बिनती मोरि।
माँगत हौं कर जोरि कै तुम ते, लागि रहै दृढ़ डोरि ॥ १ ॥
रह्यों अजान नहीं मैं जान्यो, बहुत हीन मति थोरि।
जब ते कृपा करि आपन जान्यो, तब ते सकौं का तोरि ॥ २ ॥
अब उसवास[2] न एकौ मानौं, चाखि नाम रस घोरि।
सदा भरोसा आस तुम्हारी, भर्म फंद ते तोरि ॥ ३ ॥
चरन ते सीस टरै नहिं टारे, दीजे हमहिं न खोरि।
जगजिवन दास तुम्हार कहावै, सतसंगति गहि पोढ़ि ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

अब मोर मनुवाँ समुझि डेरात।

(१) द्रोही। (२) संसय।

वहि दिन का मोहिं संसा ब्यापत, कछु गति जानि न जात ॥ १ ॥
काम न आइहि कोउ काहू के, नारि बंधु पितु मात ।
धोखा देखि सबै कोउ भूला, थिर नाहीं सब जात ॥ २ ॥
जन्म पाइ जो जानै नाहीं, कौनि कहौं कुसलात ।
जगजीवन साईं तुम तारहु, तुमहिं हाथ सब बात ॥ ३ ॥

॥ शब्द २१ ॥

अब सुनि लीजै इतनी हमारी ।
लागी रहै प्रीति निसि बासर, दास को अपने नाहिं बिसारी ॥१॥
जो मैंचहौं कहि कहँ लौ सुनावों, औगुन कर्म बहुत अधिकारी ।
सरन चरन की राखि आपनी, यहु कछु मन में नाहिं बिचारी ॥२॥
काया यहि कर्महिं की आहै, आपु ते नाहीं जात सँवारी ।
भौसागर हित जानि बूड़ जग, जेहिं जान्यो तेहिं लियो उबारी ॥३॥
लीजै राखि भाखि कहौ तुमते, केतिकबातलियो अनगन[१] तारी ।
जगजीवन के साईं समरथ, अपने निकट ते कबहुँ न टारी ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

साईं मैं नहिं आप का चीन्हा ।
को मैं आहुँ कहाँ ते आयो, तुम हीं सब छुक कीन्हा ॥ १ ॥
बिदम बुंद बनायो जामा, सो पहिराइ कै दीन्हा ।
रहि दस मास अगिन महँ बासा, तहँ तुम रच्छा कीन्हा ॥ २ ॥
बाहर होत पियत पय बिसरयो, वह सुधि सब हरि लीन्हा ।
बाल तरुन फिर बृद्ध भये जब, तबहुँ बिचार न कोन्हा ॥ ३ ॥
अब दाया करि दास जानि कै, आपन करि कै लीन्हा ।
जगजीवन निरगुन छबि देखै, चरन कमल चित दीन्हा ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

तुम सों मन लागो है मोरा ।
हम तुम बैठे रही अटरिया, भला बना है जोरा ॥ १ ॥

---

(१) अनगिनत ।

सत की सेज बिछाय सूति रहि, सुख आनन्द घनेरा।
करता हरता तुमहीं आहहु, करौं मैं कौन निहोरा ॥ २ ॥
रह्यौं अजान अब जानि पर्‌यो है, जब चितयो एक कोरा।
अब निर्बाह किये बनि आइहि, लाय प्रीति नहिं तोरिय डोरा ॥ ३ ॥
आवा गवन निवारहु साईं, आदि अंत का आहिउ चोरा।
जगजीवन बिनती करि माँगै, देखत दरस सदा रहौं तोरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द २४ ॥

साँईं मोहि ते सुमिर न जाई।
पाँच अपरबल जोर अहैं एइ, इन ते कछु न बिसाई ॥ १ ॥
निसि बासर कल देहि नहीं एइ, मोहिं औरै राह लगाई।
जो मैं चहौं गहौं तुव चरना, इन छिन छिन भरमाई ॥ २ ॥
साथ सहेलो लिहे पचीसौं, अपन अपन प्रभुताई।
जो मन आवै सोई ठानैं, हठ हटकि देहिं भटकाई ॥ ३ ॥
महल माँ टहल करै नहिं पावा, केहि बिधि आवहुँ धाई।
ऊँचे चढ़त आनि कै रोकत, मानहिं नहीं दोहाई ॥ ४ ॥
अब करु दाया जानि आपना, बिनय कै कहौं सुनाई।
जगजीवन कै इतनी बिनती, तुम सब लेहु बनाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

साँईं मैं तो बड़ा अनारी।
कुमति प्रसंग बास नर्कहिं मा, आवत नाहिं बिचारी ॥ १ ॥
पर्‌यों अपरबल महा मोह महँ, सुधि वह नाहिं सँभारी।
गुन नाहीं औगुन सब बहु बिधि, बिसरी सुरति हमारी ॥ २ ॥
केतो करि उपाय मैं थाक्यों, मैं मन मान्यों हारी।
अब दाया करि चरन लाइ कै, निकट ते कबहुँ न टारी ॥ ३ ॥
देहु सिखाइ पढ़ाइ ज्ञान मोहिं, करहु योग अधिकारी।
जगजीवन का चरन तुम्हारे, सूरति रहौं निहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ ॥

साईं कुदरति अजब तुम्हारी ।
तुम हहु अजब अजब हैं बन्दे, मैं तुम्हरी बलिहारी ॥ १ ॥
दुनिया अजब धंध मा लागी, सुधि बुधि नाहि सँभारी ।
आये फूटि टूटि गारत भे, का सों कहैं पुकारी ॥ २ ॥
समुझै बूझै सूझै नाहीं, शब्द कही कहि हारी ।
सो अँदेस होत मन मोरे, का धौं करहि बिचारी ॥ ३ ॥
आये कहँ ते फिरि कहँ जैहैं, कहँ ग्रह ग्राम सँवारी ।
भूले फिरहिं मोह मद माते, इहँ हहिं दिन दुइ चारी ॥ ४ ॥
जेहिं अपनाइ कै चेत चितायौ, तिन सत सुरति सँभारौ ।
जगजीवन मूरति मा मिलि गे, नैन सों निरखि निहारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

सतगुरु समरथ साहब चरनन पर वारी ॥ टेक ॥
हौं अज्ञान बुद्धिहीन सुद्धि ना सँभारी ।
कर दोऊ तन सीस दीन्हौं गोद हौं तुम्हारी ॥ १ ॥
राखिये अब सरन अपनी कर्म ना बिचारी ।
नेग[1] जन्म भर्म के रे डारिये मिटा री ॥ २ ॥
हौं तुम्हार आदि अन्त देहु ना बिसारी ।
ऐसी भाँति दिनं राति चित्त ते न टारी ॥ ३ ॥
बिनय करि कै कहत हौं सुनि लीजिये हमारी ।
जगजीवन का और ना पनाह है तुम्हारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २८ ॥

बालक बुद्धि हीन मति मोरी । भरमत फिरैं नाहिं दृढ़ डोरी ॥
सूरति राखौ चरनन मोरी । लागि रहै कबहूँ नहिं तोरी ॥
निरखत रहौं जाउँ बलिहारी । दास जानि कै नाहिं बिसारी ॥
तुमहिं सिखाय पढ़ायो ज्ञाना । तब मैं धरचों चरन का ध्याना ॥

---

(१) अनेक ।

साईं समरथ तुम हो मोरे। बिनती करौं ठाढ़ कर जोरे॥
अब दयाल ह्वै दाया कीजै। अपने जन कहँ दरसन दीजै॥
नाम तुम्हार मोहिं है प्यारा। सोइ भजे घट भा उजियारा॥
जगजीवन चरनन दियो माथ। साहब समरथ करहु सनाथ॥

॥ शब्द २९ ॥

तेरा नाम सुमिरि ना जाय।
नहीं बस कछु मोर आहै, करहुँ कौन उपाय॥ १॥
जबहिं चाहत हितू करि कै, लेत चरनन लाय।
बिसरि जब मन जात आहै, देत सब बिसराय॥ २॥
अजब ख्याल अपार लीला, अंत काहु न पाय।
जीव जंत पतंग जग महँ, काहु ना बिलगाय॥ ३॥
करौं बिनती जोरि दुउ कर, कहत अहौं सुनाय।
जगजीवन गुरु चरन सरनं, ह्वै तुम्हार कहाय॥ ४॥

॥ शब्द ३० ॥

मैं तो अरज करौं दरबार।
भौसागर तकि भरम होत मोहिं, अब की उतारहु पार॥ १॥
औगुन बहुत नहीं गुन एकौ, काम करत बिन कार।
पग बिहीन कर नाहीं जिन के, ताहि खवावत चार॥ २॥
बुद्धि हीन सुधि हीन अहौं मैं, का करि सकौं बिचार।
अहौं भरोसे सदा तुम्हारे, तुम प्रति पालनहार॥ ३॥
सुनियत ग्रंथ पुरान कहत अस, बहुतन करि निस्तार।
छिनहिं निहाल किहेउ प्रभु बहुतन, द्विज के दारिद मार॥ ४॥
अब दाया करिये प्रभु इतनी, आवै मोहिं इतबार।
जगजीवन चरनन परि बिनवै, मन ना बहै हमार॥ ५॥

॥ शब्द ३१ ॥

हम तें चूक परत बहुतेरी।
मैं तो दास अहौं चरनन का, हम हूँ तन हरि हेरी॥ १॥

बाल-ज्ञान प्रभु अहै हमारा, झूठ साँच बहुतेरी ।
सो औगुन गुन का कहौं तुम तें, भौसागर तें निबेरी ॥ २ ॥
भव तें भागि आयौं तुव सरनै, कहत अहौं अस टेरी ।
जगजीवन की बिनती सुनिये, राखौ पत जन केरी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

अब तुम होहु दयाल तुम्हारी पैयाँ परौं ॥ टेक ॥
सूझत नहि मैं भ्रमत फिरत हौं, पर्यों मोह के जाल ॥ १ ॥
नाम तुम्हार सुमिरि नहिं आवै, जग संगति जंजाल ॥ २ ॥
आवत जब सुधि वहै समय की, ब्याकुल होहुँ बेहाल ॥ ३ ॥
हाथ पाँव मेरे बल नाहीं है, तुमहिं करहु प्रतिपाल ॥ ४ ॥
जगजीवन काँ दरसन दीजे, अब मोहि करहु निहाल ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

बार बार कहि बिनय सुनावौं । तुम्हरी कृपा तें सुरति लगावौं ॥१॥
अनत न जाउँ जाउँ बलिहारी । सूरति कबहूँ रहै न न्यारी ॥२॥
जब तुम चहहु रहौं तब पासा । कृपा करहु तब बसि बिस्वासा ॥३॥
दास केर बस एकौ नाहीं । तुम जानौं जानै मन माहीं ॥४॥
जब तुम जन का देत जनाई । तब मन भजत अहै लौ लाई ॥५॥
दूजा कौन है काहि बतावौं । कृपा करहु तब ना बिसरावौं ॥६॥
जगजीवन कहै बिनय सुनाई । सतगुरु चरन बिसरि नहिं जाई॥७॥

॥ शब्द ३४ ॥

साईं को गति गावै तेरी ।
जेहि जस ज्ञान बयान कीन्ह तस, सूरत बास बसे री ॥ १ ॥
ब्रह्मा सनक सनंदन सक्ती, संकर सहस फने री ।
बिस्नु सत्य रस चाखि मस्त है, गावत ज्ञान घनेरी ॥ २ ॥
अंत अनंत ध्यान तेहि कीन्हे, मे सतलोक बसेरी ।
नाम अधार बिचारत ज्यों जग, सन्मुख पलक न फेरी ॥ ३ ॥

जेहि हित जानि दया दुख काट्यौ, भौजल धार निवेरी।
जगजीवन बिस्वास तुम्हारी, टूटी भ्रम की बेरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

चरन सरन अब आयौं, मैं नहिं जानी रे ॥ टेक ॥
मैं अजान अज्ञान है, कछु सुधि न सँभारी रे।
अंध रह्यों सूझा नहीं, भूल्यों संसारी रे ॥ १ ॥
पाँच भ्रमत जहँ तहाँ, एक नहिं आयो रे।
मोरि लागु नहिं अहै, ता ते बिसरायो रे ॥ २ ॥
मिलि पचीस तेहि सँग, मोहिं बहुरि दिखायो रे।
नाचि नाचि मोहिं लियो, नाम नहिं आयो रे ॥ ३ ॥
मैं तो मद माता फिरचों, चित ठहर न आना रे।
भा गुमान रस पाय तेहिं, सुधि बुधि हैवाना रे ॥ ४ ॥
कठिन जार भ्रम फाँसि है जग, बँधा संसारा रे।
जेहि का तुम दाया करी, तेहि भयो उबारा रे ॥ ५ ॥
न्यारे तुम्हरे दास भे, लिप्त नहिं काहू माहीं रे।
जगत कहै हम महँ अहैं, वै तुमहीं माहीं रे ॥ ६ ॥
औगुन क्रम सब मेटिये, सुनु कृपा-निधाना रे।
जगजीवन दास तुम्हार है, चरनन लिपटाना रे ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

बिनती सुनिये कृपा-निधान।
जानत अहौ जनावत तुमहीं, का करि सकौं बयान ॥ १ ॥
खात पियत जो डोलत बोलत, और न दूसर आन।
व्यापि रह्यो कहुँ चेत सरन करि, काहू भरम भुलान ॥ २ ॥
माया प्रबल अंत कछु नाहीं, सो मन समुझि डरान।
अब तो सरन और ना जानौं, करिहौं सो परमान ॥ ३ ॥
सुद्धि बुद्धि कछु नाहीं मोरे, बालक जैसे अजान।
मात सुतहि प्रतिपाल करत है, राखत हित करि प्रान ॥ ४ ॥

मैं केतानि कवनि गिनती महँ, गावत बेद पुरान।
जगजीवन का आपन जानहु, चरन रहे लिपटान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

साँईं मैं तुम्हरी बलिहारी।
कहौं काह कहि आवत नाहीं, मन तन तुम पर वारी ॥ १ ॥
देखत अहौं खरो ताम्रोवर[१], झलकै जोति तुम्हारी।
केहु भरमाय देत माया महँ, केहु करत हितकारी ॥ २ ॥
देखत अहहूँ खेलत सब महँ, को करि सकै बिचारी।
करता हरता तुम हीं आहौ, अजब बनी फुलवारी ॥ ३ ॥
दासन दास कै मोहिं जानिये, जानत अहौ हमारी।
जगजीवन दियो सीस चरन तर, कबहूँ नाहिं बिसारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

साईं मैं अजान अज्ञाना।
जानों नहीं बूझि नहिं आवै भरमत फिरौं भुलाना ॥ १ ॥
हौ समरत्थ सिद्धि के दाता मोहिं सिखावहु ज्ञाना।
करौं सो जानि जनाय देव जब धरौं चरन कै ध्याना ॥ २ ॥
दीन लीन सुभ सुमन सुमारग यह बर दीजै दाना।
आवै दृष्टि दिष्ट देखत रहौं परगट करौं बखाना ॥ ३ ॥
काहूँ[२] रहौं सरन नहिं छूटै तुम तजि भजौं न आना।
जगजीवन कर जोरि कहैं यह निरखत रहौं निरबाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

अब मैं कासों कहौं सुनाई।
केहू घट की खाली नाहीं, जोति रही सब छाई ॥ १ ॥
तुम हीं ब्रह्मा तुम हों बिस्नू, संभू तुमहिं कहाई।
सक्ती सेस गनेस तुम्हीं हौ, दूजा नहिं कहि जाई ॥ २ ॥

---

(१) ताँबा को सदृश यानी लाल रंग। (२) कहीं।

बासा सब महँ अहै तुम्हारो, नहीं कहूँ बहराई[1] ।
जानि ऐसी परत मोहिं का, चरन सरन महँ आई ॥ ३ ॥
दुक्ख दे फिर दुक्ख मेटत, सुक्ख देत अधिकाई ।
दास आपन जानौ जिन का, तिन के रहौ सहाई ॥ ४ ॥
तुम हीं करता तुम हीं हरता, सृष्टी तुमहिं बनाई ।
जगजीवन के सत्तगुरु तुम, कौन कहै गोहराई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४० ॥

मेरे गुनाह माफ करिये अब साईं ॥ टेक ॥
जैसे मातु सुतहिं पालत छीर दै पियाई ।
लिये गोद रहै निसु दिन कबहुँ ना घिनाई ॥ १ ॥
रहै सुखित दुक्ख नाहिं कर ते ले उठाई ।
कंठ लावै मुक्ख चूमै हुलसि के हँसाई ॥ २ ॥
सुतहिं दुक्ख दुखित मातु कछु ना सुहाई ।
इहै मोर बिनती जानु राखु ऐसी नाईं ॥ ३ ॥
पतित अनेक तारि लीन्हे गनत ना सिराई ।
मेटि औगुन छिनक माहिं लयो है अपनाई ॥ ४ ॥
सुने ते बिस्वास आवत बेद सब्द गाई ।
सूझि सत मत परा जबहीं दियो तबहिं लखाई ॥ ५ ॥
बुद्धि केतनि अहै मोहिं माँ करौं का कबिताई ।
जगजीवन का करहु आपन चरनन में लिपटाई ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

अब मैं करौं धौं कौन उपाई ।
मैं चाहौं निस बासर सुमिरौं, तुम डारत बिसराई ॥ १ ॥
तुम जब जानत तब मैं जानत, तब हीं मोहिं सुधि आई ।
सूझत बूझत जानि परै तब, रहत हौं सुरति लगाई ॥ २ ॥

---

(१) बाहर ।

है केतनि मति कहौं कहाँ लहि, तुम ते कहा छिपाई ।
जल थल घट घट सबके मन महँ, जहँ तहँ रह्यो समाई ॥ ३ ॥
ब्रह्मा सिव औ बिस्नु के राचित, वहि मन रह्यौ समाई ।
जगजीवन जब कृपा तुम्हारी, चरन रह्यो लिपटाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

नैना चरनन राखहुँ लाय ।
केतो रूप अनूपम आहै, देऊँ सब बिसराय ॥ १ ॥
राति दिना औ सोवत जागत, मोहीं इहै सोहाय ।
नहीं पल पल तजौं कबहूँ, अनत[1] नाहीं जाय ॥ २ ॥
मोरि बस कछु नाहिं है, जब देत तुमहिं बहाय ।
चहत खैंचि कै ऐंचि राखत, रहत हौं ठहराय ॥ ३ ॥
दियो नाथ सनाथ करि अब, कहत अहौं सुनाय ।
जगजीवन के सत्त गुरु तुम, सदा रहहु सहाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

भइउँ मैं सनाथ आइ के ॥ टेक ॥
महा मोह सोवत रहिउँ । उठिउँ चौंकि जागि कै ॥१॥
मोहिं उपदेस दियो मते महँ । चरन कमल रहिउँ लागि कै ॥२॥
जग को देखि मोहिं डरु लाग्यो । आइउँ सरन में भागि कै ॥३॥
जगजीवन छबि निरखि देखि रहि । मस्त भइउँ रस पागि कै ॥४॥

॥ शब्द ४४ ॥

साईं मोहिं और न भावै ।
जो मैं चहौं रहौं चरनन ढिग, जगत भेख भरमावै ॥ १ ॥
कानि न मानत जानत आहै, नहिं बिबेक मन आवै ।
जेहिं के मन माँ जैसी आवत, सो तैसे गुन गावै ॥ २ ॥
अद्भुत ख्याल तुम्हारे आहैं, बिन कर नाच नचावै ।
कहुँ उपदेस अँदेस मिटावै, केहूँ दूरि बहावै ॥ ३ ॥

---

(१) और कहीं ।

अब सरनाय चरन की राखौ, सूरति नहिं भरमावै।
जगजीवन जो बूझै जैसे, तेहि का तैसे भावै॥ ४॥

॥ शब्द ४५॥

प्रभु जी बक्सहु चूकि हमारी।
जो पुरबुज अपने कर्मन ते, डारयो सर्ब मिटा री॥ १॥
राखहु पास सदा चरनन के, निकट ते नहीं टारी।
ज्ञानत रहहु सदाँ हित आपन, कबहूँ नाहिं बिसारी॥ २॥
पाँच पचीस बड़े पर पंची, यइ डारत संसारी।
येई पल छिन छिनहिं भ्रमावत, नाहीं लागु हमारी॥ ३॥
अब मन लागि पागि रह तुम ते, सूरति रहै न न्यारी।
जगजीवन को भक्ति बर दीजै, जुग जुग आस तुम्हारी॥ ४॥

॥ शब्द ४६॥

अब मैं कहौं कहाँ लगि ज्ञान।
सहस मुख सों सेस बरनत, मैं अहौं केतान॥ १॥
बिस्नु सुमिरत सिवं सक्ती, ब्रह्म बेद बखान।
सर्ब मई बिराज रही है, जोति वह निर्बान॥ २॥
चहौ सो करि लेहु पल में, अहै सो न प्रमान।
कृपा करि जेहिं लियो छिन में, जानि आपु समान॥ ३॥
करौं बिनती बहुत बिधि ते, हौं अजान हैवान।
जगजीवन गुरु अहै समरथ, चरन हौं लिपटान॥ ४॥

॥ शब्द ४७॥

प्रभु तुम सों मन लागा मोरा।
नेग[1] जन्म के कर्म काटो, माँगौं दरसन तोरा॥ १॥
मोहिं ते तौ कछु कहि नहि आवै, मैं पापी हौं चोरा।
निसु दिन तुम कहँ सुमिरत राहौं, इतना मानु निहोरा॥ २॥

(१) अनेक।

यह अरदास[1] मानि ले साईं, तनिक देखिये कोरा।
जगजीवन काँ जानु आपना, तोरु प्रीत नहिं डोरा ॥ ३ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

मेरी बिनय सुनिये राम।
भरमत हौं दिन रात छिन छिन, कैसे सुमिरौं नाम ॥ १ ॥
महा अहै अपार माया, मोह सुख परि काम।
छूटि गे सत टूटि डोरी, लागि हित धन धाम ॥ २ ॥
मेटु सर्ब गुनाह मेरे, पाप कर्म हराम।
जगजीवन काँ जानु आपन, चरन केर गुलाम ॥ ३ ॥

॥ शब्द ४९ ॥

पर्‌यों मैं जार[2] कैसे जानौं रे।
जो तुम कौल कीन तब हमते, अब कैसे सुधि आनौं रे ॥ १ ॥
निसबासर में भ्रमत फिरत रहि, केहि बिधि मन थिर आनौं रे।
दे उपदेस अँदेस मिटावो, तौन ठान मैं ठानौं रे ॥ २ ॥
लागि रहे मोहिं टूटै नाहीं, माँगि माँगि रस सानौं रे।
जगजीवन बिनती करि माँगे, चरन कमल अनुरागौं रे ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५० ॥

साँईं मेरे हम हैं दास तुम्हारे।
तुम्हरी कृपा ते सुमिरौं निसु दिन, कबहूँ न रहौं बिसारे ॥ १ ॥
लागी रहै प्रीति चरनन ते, होउँ न कबहूँ न्यारे।
नहिं बसि अहै मोर बपुरे[3] को, रहिये आपु सँभारे ॥ २ ॥
बालक बुद्धि अजान जान नहिं, जननी केर दुलारे।
खेलत सुभ औ असुभ न जानत, हित करि गोद लिया रे ॥ ३ ॥
अस्थन लाग पियत पय हित करि, नहीं कुदृष्टि निहारे।
सुनिय कहौं कर जोरि मोरि यह, बिनय सों करौं पुकारे ॥ ४ ॥

---

(१) अरजदाश्त, प्रार्थना। (२) जाल। (३) ग़रीब।

छबि मूरति निरखत देखत रहौं, नाहीं और निहारे।
जगजीवन काँ आपन जानहु, औगुन सब मिटारे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५१ ॥

साँईं मैं नहि आपु क जाना।
को मैं आहुँ कहाँ ते आयों, फिरत हौं कहाँ भुलाना ॥ १ ॥
काया कंचन लोक बनायो, तेहि का अंत न जाना।
बूझौं कहँ अस्थान कौन है, सब अंग ठहराना ॥ २ ॥
देखत हौं काहू नहि न्यारा, समुझत आहौं ज्ञाना।
कौन जुक्ति जग बंध निकरिये, कैसे ह्वै मस्ताना ॥ ३ ॥
मैं जानौं मन तुम हीं साहब, ता ते मन बिलगाना।
तेहिका रूप अनूप अमूरति, गगन मंडल अस्थाना ॥ ४ ॥
तेहि ते सूरति फूटी तेहि माँ, गुरु अलख करि माना।
चेला ह्वै कै करहुँ बंदगी, सीस करहुँ कुरबाना ॥ ५ ॥
तुम ते मैं संतुष्टा ह्वै हौं, अहहु मूर्ति निर्बाना।
जगजीवन पर दाया कीन्हो, तब ते अब पहिचाना ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

मोहिं का बार बार भटकायो।
भूला फिर्‌यौं अनेक जन्म लहि, अंत जानि नहिं पायो ॥ १ ॥
काया धरि धरि नाच्यौं बहु बिधि, आसा बँधि बिसरायो।
जो सुधि रही सुक्ख हरि मोरी, चेत नहीं कछु आयो ॥ २ ॥
आवत सुधि मोहिं कबहूँ कबहूँ, साँचु मैं नाहीं पायो।
थिर नहिं बास भई नहिं काहूँ, अवत जात दुख पायो ॥ ३ ॥
करि करुना अघ करम मिटायो, अपनि सरन लै आयो।
जगजीवन अब संसै नाहीं, चरनन सीस चढ़ायो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५३ ॥

साँईं यह बिनती सुनु मोरी ॥ टेक ॥

जन्म पाइ कछु जान्यों नाहीं, कछु बसि नाहीं मोरी ।
बाद बिबाद निंदा कुटिलाई, यह सब मोहिं माँखोरी ॥ १ ॥
औगुन अपने कहँ लौं भाखौं, गनिन सिराय[१] बहु को री ।
माया मोह भव जाल में बंधो, दाया करि कै छोरी ॥ २ ॥
माय सुतहिं दुख देत न कबहूँ, नहिं कुदृष्टि करि हेरी ।
जगजीवन काँ आपन जानहु, प्रीति न कबहूँ तोरी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

मेरी हाथ तुम्हारे डोरी ॥ टेक ॥
है केतनि मति बुद्धि हीन है । नहिं कछु अहै बूझ मति मोरी ॥१॥
मन कठोर आभाव भाव नहिं । करौं कपट भ्रमि भटकौं चोरी ॥२॥
निसु बासर छिन छिन बिसरत है । नहिं निरखि जात छबि तोरी ॥३॥
राखहु पास बिस्बास देहु बर, बिनय कहौं कर जोरी ।
जगजीवन चित चरनन दीन्हे, रहै सीस कर जोरी ॥४॥

॥ शब्द ५५ ॥

साँईं नावों तोहिं काँ माथ ।
सत्त गुरु समरत्थ साँईं, जनहिं करहु सनाथ ॥ १ ॥
सत्त संगं रंग मोहिं मन, जुग बंध अंतर सोय ।
निरखि देखहुँ नैन ते छबि, रही सुरति समोय ॥ २ ॥
जलं थलं औ पवन पानी, ब्यापितं है सोय ।
ब्रह्म बिस्नु महेस सेसं, एक दूज न कोय ॥ ३ ॥
जक्त संगति रहैं न्यारे, दास ते जग माहिं ।
कमल मधुकर प्रीति संपुट[२], बिलग होवैं नाहिं ॥ ४ ॥
रहि निरासं नाम आसं, चित्त चरन समाय ।
जगजीवन बिस्वास मन, सो सुरति दरस कराय ॥ ५ ॥

---

(१) पार पावै । (२) भंवरा को कँवल से ऐसी प्रीति है कि जब वह उस पर बैठा कोई सुध बुध नहीं रहती यहाँ तक कि साँझ को जब कँवल बदुर कर संपुट हो जाता है तो भँवरा उसी के भीतर बंद हो जाता है ।

॥ शब्द ५६ ॥

प्रभु जी बसि हमार कछु नाहीं।
जो तुम चहत करत हो सोई, ब्यापि रह्यो सब माहीं ॥ १ ॥
कहुँ कबि ज्ञानी ज्ञान कथत हो, कहुँ पंडित बेद कहानी।
कहूँ कुमति कहुँ सुमति बिराजत, केहु गति नाहीं जानी ॥ २ ॥
कहूँ चोर कहुँ साह कहावत, कहूँ अदत्त कहुँ दानी।
कहुँ हरि लेत देत पल छिन माँ, आहै अकथ कहानी ॥ ३ ॥
कहूँ दैत्त कहुँ अहौ देवता, कहुँ बिबाद रचि ठानी।
कहुँ रच्छा कहुँ बद्ध करत हौ, कहू करत प्रधानी ॥ ४ ॥
माया प्रबल नचावत नाचत, निर्मल जोत निर्बानी।
जगजीवन के सतगुरु साहब, चरन सुरति लिपटानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

साहब तुम केते अधम उधारी।
अजब रीझ तुम्हारि आहै, करि को सकै बिचारी ॥ १ ॥
पतित अनंत गनै को कहँ लौं, लीन्ह्यो छिन महँ तारी।
मैं कह कहौं बरनि नहिं आवै, बेद पुरान पुकारी ॥ २ ॥
जेहि काँ आपन हित कर जान्यो, दीन्ह्यो सुख अधिकारी।
जब जब संकट पर्यो भक्त कहँ, लीन्ह्यो ताहि उबारी ॥ ३ ॥
जिन केहु गरब कीन भक्तन ते, तिन का गरब निवारी।
निकटहिं बसत अहहु अंतर महँ, रहत जोत नहिं न्यारी ॥ ४ ॥
कहौं कर जोरि लेहु सुन मोरी, हमरे टेक तुम्हारी।
जगजीवन गुरु चरन तुम्हारे, कबहुँ न रहौं बिसारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

साँईं मोहिं भरोस तुम्हारा।
मोरे बस नहिं अहै एको, तुमहिं करो निस्तारा ॥ १ ॥
मैं अज्ञान बुद्धि है नाहीं, का करि सकौं बिचारा।
जब तुम लेत पढ़ाय सिखावत, तब मैं प्रगट पुकारा ॥ २ ॥

बहुतक भवसागर महँ बूड़त, तेहि उबारि कै तारा।
बहुतन का जब कष्ट भयो है, तिन कै कष्ट निवारा ॥ ३ ॥
अब तौ चरन कि सरनहिं आयों, गह्यों मैं पच्छ तुम्हारा।
जगजीवन के साँईं समरथ, मोहिं बल अहै तुम्हारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

साँईं चहहु करहु सो होई।
जस चाहो तस नाच नचावो, काह करै जग कोई ॥ १ ॥
पैदा करत निपैद करत हौ, दै हरि लेत हौ सोई।
केहु धन माया बिदित देत हौ, फिर छिन डारत खोई ॥ २ ॥
केहु है दीनं लीन सुमति ते, अंतर ध्यान चरन रह टोई।
कोई मरै बहै अपंथ महँ, भे अनाथ नर लोई ॥ ३ ॥
अब बिस्वास आस है तुम्हरी, तकौं चरित कहि जात न कोई।
जगजीवन का आपन जानहु, सूरति राखौ छबिहिं समोई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६० ॥

काह कहौं कहि आवत नाहीं, मन तन तुम पर वारी ॥ टेक ॥
देखत अहौ दूसरो नाहीं, एकै जोति तुम्हारी।
केहु भरमाय देत माया महँ, केहु करत हितकारी ॥ १ ॥
देखत आहौ खेलत सब महँ, को करि सकै बिचारी।
करता हरता तुमहीं आहौ, अजब बनी फुलवारी ॥ २ ॥
दासन दासा मोहिं जानिये, जानत अहौ हमारी।
जगजीवन दास सीस दियो चरनन, कबहूँ नाहिं बिसारी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

आरति करौं सुनो मेरे प्यारे, तुम गुनाह के मेटनहारे ॥ टेक ॥
बुद्धि हीन कछु गति नहिं जानौं, कृपा करहु तब नाम बखानौं ॥ १ ॥
सेस महेस ब्रह्म धर ध्याना, वेहू नहिं करि सकैं बखाना ॥ २ ॥
अंत न खोज अगाध को गावै, जेहि जस चह तस ध्यान लगावै ॥ ३ ॥
जगजीवन के बस कछु नाहीं, दाया चरन बसहिं मन माहीं ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

प्रभु जी चहौ सो तुम करहु।
होय तुरत बिलंब नाहीं, जौन इच्छा धरहु ॥ १ ॥
चहहु सुमेरहि करहु किनका, कन सुमेरहि करहु।
अहै सबै बनाव तुम्हरा, गिरहिं अधरै[1] धरहु ॥ २ ॥
तीन लोक बनाउ चौथा, चहहु बिन कर मलहु।
चहहु देहु बढ़ाइ दै कर, चहहु तौ फिर लरहु ॥ ३ ॥
चहहु पाल जियाइ करि कै, चहहु छिन महँ मरहु[2]।
जगजीवन के सत्त गुरु तुम, बास गगनहिं करहु ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

साँईं कठिन भक्ति है तेरी।
जिन काहू का सुमिरन आवा, जब किरपा भै तेरी ॥ १ ॥
नहीं कबूलौ परत बंदगी, केतो कहत हौं टेरी।
जिन काँ चहा लहा पै तिनहीं, मेट्यो भरम तेहि केरी ॥ २ ॥
माला मुद्रा तिलक दिहे हैं, करि उपाय बहुतेरी।
बैठि तपस्या करि जंगल माँ, है रह खाक कि ढेरी ॥ ३ ॥
मते मंत्र जेहि काँ कहि दीन्ह्यो, भै सुधि सत्य घनेरी।
जगजीवन सतगुरु मिलि उतरे, बहुरि करहिं नहिं फेरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

साहब अजब कुदरत तोर।
देखि गति कहि जात नाहीं, केतिक मति है मोर ॥ १ ॥
नचत सब कोउ काछि नाचा, भ्रमत फिर बिन डोर।
होत औगुन आप ते, सब देत साहब खोर[3] ॥ २ ॥
कौल कै जग पठै दीन्ह्यो, तौन डारचो तोर।
करत कपटं संत तेती, कहैं मोरी मोर ॥ ३ ॥

---

(१) आसमान। (२) मारो। (३) दोष।

ऐसि जग की रीति आहै, कहा कहिये टेर।
जगजीवन दास चरन गुरू के, सुरत करिये पोढ़ ॥ ४ ॥

चेतावनी

॥ शब्द १ ॥

अरे मन देहु तजि मतवारि।
जे जे आये जगत महँ एहि, गये ते ते हारि ॥ १ ॥
नहीं सुमिर्यो नाम काँ, सब गयो काम बिगारि।
आपु काँ जिन बड़ा जान्यो, काल खायो मारि ॥ २ ॥
जानि आपुहिं छोट जग, रहि रहौ डोरि सँभारि।
बैठि कै चौगान निरखहु, रूप छबि अनुहारि[1] ॥ ३ ॥
रहौ थिर सतसंग बासी, देहु सकल बिसारि।
जगजिवन सतगुरु कृपा करि कै, लेहैं सबै सँवारि ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

अरे मन समुझ करु पहिचान।
को तैं अहसि कहाँ ते आयसि, काहे भर्म भुलान ॥ १ ॥
सुधि सँभार बिचार करिकै, बूझु पाछिल ज्ञान।
नाचु एहि दुइ चारि दिन का, अचल नहिं अस्थान ॥ २ ॥
लोक गढ़ एहु कोट काया, कठिन माया बान।
लाग सब कें बचे कोउ नहिं, हर्यो सब का ध्यान ॥ ३ ॥
खबरदार बेखबर हो नहिं, ओट नाम निर्बान।
जगजिवन सतगुरु राखि लेहैं, चरन रहु लिपटान ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

अरे नर का एहिं तकि बौराना।
सुख परि कौल कौन तेहिं त्यागी, मन माना मन जाना ॥ १ ॥

---

(१) देख कर।

चला जात कोउ अचल नहीं है, अबहूँ समझ हैवाना ।
धोखा है तकि भूल फूल नहिं, होइहि सबै बिराना ॥ २ ॥
दिन दुइ चार की संगत सब की, ह्वैहै अंत चलाना ।
एत दिन रहि इतर भ्रम भीतर, बिना भजन पछिताना ॥ ३ ॥
लेहु बचाय नचाय नाम गहि, कहौं नियाये ज्ञाना ।
जगजीवन सब बृथा जानि कै, धरहु चरन कर ध्याना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मनुवाँ ऐसी प्रीति लगाव ।
ससि रूप जैसे चकोर निरखत, ऐसे चित्त मिलाव ॥ १ ॥
सूम के हित दाम ज्यौं नित, नेम कौड़ी भाव ।
अस लागि रहु रस पागि दुनियाँ, धंध सब बिसराव ॥ २ ॥
जुवा कामी रतै कामिनि, रैन दिन भरमाव ।
अस रहै लागी नहीं भूलै, दूरि दुबिधा भाव ॥ ३ ॥
बहुत सुत हित बाँझनी के, बसत हिरदय ठावँ ।
जगजिवन गुरु के चरन गहि रहु, भक्ति को अस नावँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

मन तैं काहे का करत गुमान ।
रहहु अधीन नाम वह सुमिरहु, तोहिं सिखावौं ज्ञान ॥ १ ॥
आये जे जे फूलि भूलि गे, फिर पाछे पछितान ।
फिरि तौ कोई काम न आवा, ह्वैगा जबै चलान ॥ २ ॥
जो आवा सो खाकहिं मिलिगा, उड़ि उड़ि खेह उड़ान ।
बृथा गयो आय जग जनमें, जो पै नाहीं जान ॥ ३ ॥
सुद्धि सँभारि सँवारि लेहु करि, अधरम करहु अड़ान ।
जगजीवन गुरु चरन गहे रहु, निरगुन तकु निरबान ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मैं त जग त्यागि मन चलिय सिर नाई ।
नाम जानि दीन हीन करिये दीनताई ॥ १ ॥

अहंकार गर्ब ते सब गये हैं बिलाई।
रावन के सीस काटि राम की दोहाई ॥ २ ॥
जिन जिन गुमान कीन मारि गर्दही मिलाई।
साधि साधि बाँधि प्रीति ताहि पर सहाई ॥ ३ ॥
परसहु गुरु सीस डारि दुनिया बिसराई।
जगजीवन आस एक टेक रहिये लगाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

अरे मन देहु सबै बिसराय।
दीन ह्वै लवलीन करि कै नाम रहु लौ लाय ॥ १ ॥
नाम अमृत जपहु रसना गुप्त अंतर पाय।
मैल छूटि कै होय निर्मल सुद्धि पाछिल आय ॥ २ ॥
निर्गुनं निहारि निरखहु अनत नाहीं जाय।
सीस दुइ कर परहु चरनन छूटि नाहीं जाय ॥ ३ ॥
सदा रहहु सचेत हेत लगाइ नहिं बिसराय।
जगजीवन परकास मूरति सूरति सुरति मिलाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

हमारा देखि करै नहिं कोई।
जो कोइ देखि हमारा करिहै, अंत फजीहति होई ॥ १ ॥
जस हम चले चलै नहिं कोई, करी सो करै न सोई।
मानै कहा कहे जो चलिहै, सिद्धि काज सब होई ॥ २ ॥
हम तो देह धरे जग नाचब, भेद न पाई कोई।
हम आहन सतसंगी बासी, सूरति रही समोई ॥ ३ ॥
कहा पुकारि बिचारि लेहु सुनि, बृथा सब्द नहिं होई।
जगजीवन दास सहज मन सुमिरत, बिरले यहि जग कोई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

साधो समझो मन ही माहीं।
अजब तमासे हैं दुनिया के, कछु कहिबे को नाहीं ॥ १ ॥

अस्तुति करहिं भाव करि बहु बिधि, फिर फिर निंदै कराहीं।
मैं नहिं जानो साँच कहतु हैं, परिहैं नर्कहिं माहीं ॥ २ ॥
मैं केतानि कौनि गनती महँ, कहा जात कछु नाहीं।
साहब समरथ दाया करिहैं, नाम बसत जेहि माहीं ॥ ३ ॥
करै न निंदा मैं तैं त्यागै, दीन रहै मन माहीं।
जगजीवन तेहि पर किरपा भै, बैठे अम्मर छाहीं ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

दुनिया जानि बूझि बौरानी।
झूठै कहै कपट चतुराई, मनहिं न आनहि कानी ॥ १ ॥
नहिं डरपत है सत्त राम कहँ, ऐसे हहिं अभिमानी।
है बिबाद निंदा कहि भाखहिं, तेही पापते आगे हानी ॥ २ ॥
जानत हैं मन मानत नाहीं, बड़े कहावत ज्ञानी।
नवहिं नहिंन साधु ते दीनता, बूड़ि मुए बिनु पानी ॥ ३ ॥
मैं तैं त्यागि अंतर माँ सुमिरै, परगट कहैं बखानी।
जगजीवन साधन ते नय चलु, इहै सुक्ख कै खानी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

साधो कहा जो मानै कोई।
जो कोइ कहा हमार मानिहै, भला ताहि कै कोई ॥ १ ॥
तजै गरूर पूर कहि बानी, मनहिं दीनता होई।
तेहि काँ काज सिद्धि कै जानो, सुखानंद तेहि होई ॥ २ ॥
अन्तर भजु केहुँ दुक्ख देइ नहिं, मैं तैं डारै खोई।
तेहि काँ राम सदा सुख दायक, सुद्धि ताहि कै लेई ॥ ३ ॥
परगट कहत अहैं गोहराये, जग ते न्यारे वोई।
जगजीवन मूरति वह निरखा, सूरति रही समोई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

दुनिया दुबिधा सबै परी।
जाहि केर बनाव है सब भजत नाहिं घरी ॥ १ ॥

पाइ दौलत धाम सुख परि मोर मोर करी।
मारि कै जमदूत खूँदा सबै सुधि बिसरी ॥ २ ॥
मातु पितु सुत साथ ना कोइ चले लै पकरी।
महा दुर्गति दूत कीन्ह्यो सबै सुद्धि हरी ॥ ३ ॥
समुझि बूझि सँभार सूरति नाम चित्त धरी।
जगजीवन ते पार उतरे नाम बल उबरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मनुवाँ का तकि तैं बौराना।
झूठे जग्त तमासा आहै, सुधि करु कृपानिधाना ॥ १ ॥
देखु बिचारि कै फूलु भूलु नहिं, साईं बहु निर्बारी।
छिन महँ एक बुन्द ते कीन्ह्यो, जग्त सब बिस्तारी ॥ २ ॥
देखि ऐसी जुक्ति रहिये, पलक नाहीं मारि।
जैसे ससिहिं चकोर निरखत, दियो तन मन वारि ॥ ३ ॥
रहो दीन आधीन ह्वै कै, तमा[1] तजु कहि मारि।
साईं का तब दरद आइहि, लेहै सबै सँवारि ॥ ४ ॥
होहु थिर कहुँ बहहु नाहीं, देहु दुबिधा डारि।
जगजिवन गुरु के चरन परि कै, बिनय करै पुकारि ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मन तुम काहे रसनि बिसराई।
तब तो रसनि रही रसनी महँ, अब काहे गफिलाई ॥ १ ॥
पाँच प्रचंड संग हैं तेरे, संग पचीस लेवाई।
इन ते ऐंचि खैंचि नहिं आवै, जहाँ तहाँ उठि धाई ॥ २ ॥
जुक्ति बाँधि करि लेहु एक करि, मैं तै देहु छुड़ाई।
चलि अस्थान जहाँ गुरु बैठे, रहहु बंदगी लाई ॥ ३ ॥
देखत रहहु दृष्टि नहिं टारहु, निर्मल जोति निरथाई।
जगजीवन सतगुरु के चरन गहि, रहिये थिर ठहराई ॥ ४ ॥

---

(१) लालच।

॥ शब्द १५ ॥

बैठि उजियारी देखि ले भाई ॥ टेक ॥
सतगुरु साहब गहे रहहु तुम, त्यागि देहु दुचिताई।
कर करु ध्यान दिया दाया करु, तेल तत्त भरि लाई ॥ १ ॥
बाती ब्रह्म ताहि में भेंवहु, पारसलाइ अँधियारी जाई।
जगजीवन अस निरमल निरखहु, काहे काँ जीव डेराई ॥ २ ॥

॥ शब्द १६ ॥

रहु सत साँईं राखु निहार ॥ टेक ॥
दिल खाक करु सब खाक है, चढ़ु पवन दसहूँ द्वार।
तहँ सोधि रहु छबि निरखि नैनन, ससि भानु छबि तेहिं वार ॥१॥
बैठि तहँ भ्रम त्याग करिकै, मूरति अलख अधार।
जगजीवन यहि जुक्ति रहे तेहिं, नाहिं बाँकहि बार[1] ॥२॥

॥ शब्द १७ ॥

बौरे जामा पहिरि न जाना।
को तैं आसि कहाँ ते आइसि, समुझि न देखसि ज्ञाना ॥१॥
घर वहु कौन जहाँ रह बासा, तहाँ ते किहेउ पयाना।
इहाँ तो रहिहो दुई चार दिन, अंत कहाँ कहँ जाना ॥२॥
पाप पुन्न की यह बजार है, सौदा करु मन माना।
होइहि कूच ऊँच नहिं जानसि, भूलसि नाहिं हैवान ॥३॥
जो जो आवा रहेउ न कोई, सब का भयो चलाना।
कोऊ फूटि टूटि गारत भा, कोउ पहुँचा अस्थाना ॥४॥
अब कि सँवारि संभारि बिचारि ले, चूका सो पछिताना।
जगजीवन दृढ़ डोरि लाइ रहु, गहि मन चरन अड़ाना ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

मन महँ अन्तर सुमिरहु नाम।
कर्म अनेक कटहिं छिन महियाँ, सुफल होहिं दृढ़ काम ॥ १ ॥

---

(१) बाल टेढ़ा न हो।

तजु परपंच दुष्टई झूँठी, झूँठे हैं गृह ग्राम।
झूँठे हैं सब नाम बिहूना, झूँठे हैं धन धाम ॥ २ ॥
मात पिता भगनी भाई सुत, हित कुटुम्ब सुख बाम।
एहि आसा झूँठे परि भूले, कोउ नहिं आयो काम ॥ ३ ॥
गहि रहु जुक्ति जग्त ते न्यारे, सत संजोग बिस्राम।
जगजीवन निर्मल निर्भय ह्वै, दाग छूटि गा स्याम ॥ ४ ॥

॥ शब्द १९ ॥

मन महँ नाहिं बूझत कोय।
नहीं बसि कछु अहै आपन, करै करता होय ॥ १ ॥
कहत मैं तैं सूझि नाहीं, भर्म भूला सोय।
पड़े धारा मोह की बसि, डारि सर्बस खोय ॥ २ ॥
करै निंदा साध की, परि पाप बूड़े सोय।
अंत फजिहत होहिंगे, पछिताय रहिहैं रोय ॥ ३ ॥
कहैं समुझि बिचारि कै, गहि नाम दृढ़ धरु टोय।
जगजीवन ह्वै रहहु निर्भय, चरन चित्त समोय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

मन तैं नाहिं इत उत धाय।
रटत रहु दुइ अच्छर अंतर, अपथ गैल न जाव ॥ १ ॥
उहाँ ते निर्बिन्दु आयो, पिंड बासा गावँ।
चेति सुद्धि सँभार ले तैं, चूकु नाहीं दाव ॥ २ ॥
समुझि फिरि पछिताइ है, परि जोनि बहु डरुपाव।
सत्त सरसौं बाँटि उपटन, अंग अपने लाव ॥ ३ ॥
छूटि मैलं होय निर्मल, नूर नीर अन्हाव।
जगजीवन निर्बान होवै, मिटै सब दुचिताव ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

आपु ते डारत आपु नसाई।
कहूँ बिबाद कीन्ह भक्तन ते, पाछे मन पछिताई ॥ १ ॥

काहू क दोष देइ नहिं कोई, धाइ जरै जो जाई ।
साधु बिबेकी दाया राखत, रामहिं दरद न आई ॥ २ ॥
गर्ब-प्रहारी गुमान न राखैं, करै जानि जो जाई ।
रावन औ हरनाकुस मारा, कछू बिलम्ब न लाई ॥ ३ ॥
नर केतान कवनि गिनती महँ, कीट कि नहिं समताई ।
जो भक्तन ते बैर कियो है, अंत रसातल जाई ॥ ४ ॥
नहिं मानै तौ बझति ले मन, कहत अहौं गोहराई ।
जगजीवन जे दीन लीन मन, तिन पर सदा सहाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

दुनियाँ परि परिपंच न जानी ।
नहिं नय चलहिं गुमान लादे, बोलहिं बिष रस बानी ॥ १ ॥
सिद्ध साध कै निंदा करि, नहिं डेरु राम क मानी ।
अंत भला नहिं आगे होइहि, दिन दिन होइहि हानी ॥ २ ॥
परिहैं अंतहिं घोर नरक महँ, कहैं सत ज्ञान बखानी ।
तहाँ परे भुक्तहिं फिरि बहुते, समो बीति पछितानी ॥ ३ ॥
अहै उबार दीनता ह्वै चलि, गहि सत नाम निसानी ।
जगजीवन गुरु चरनन लागे, निरखत छबि निरबानी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

देखहु रे बौरे नैन उघारि ।
काह कौल करि आयहु जग महँ, अब कस डारेहु मनहिं बिसारि ॥ १
थिर ह्वै कोउ रहे न पाइहि, इहाँ बसेरा है दिन चारि ।
अइहैं दूत बाँधि लै जैहैं, कोऊ नाहीं लगहि गोहारि ॥ २ ॥
दौलत धाम छूटि सब जाइहि, छुटिहैं मातु पिता सुत नारि ।
जगजीवन गुरु-चरन गहे रहु, गाढ़ परिहि तौ लेहैं उबारि ॥ ३ ॥

॥ शब्द २४ ॥

यहि जियने का करु न गुमान ॥ टेक ॥

उतहि जन्म पाय नर देही, भजन बिना को नहिं पछितान ।
दौलत धाम देखि कै भूल्यो, बिसरि गयो वह पाछिल ज्ञान ॥१॥
ना थिर रहे नहीं थिर रहिहै, जाइहि अंत करि सब पयान ।
सेन समेत रावन गे छिन महँ, तिनहूँ के कछु रह्यो न निसान ॥२॥
अन्त काल सब कछु चलि जाइहिं, चलि जैहे ससि-गन अरु भान ।
जगजीवन सब कछु चलि जाइहि, रहिहै इक सत नाम निदान ॥३॥

॥ शब्द २५ ॥

मनुवाँ समुझि करहु तेवान[1] ।
जब तुम आयहु साईं पठवा, अब कस भयो हैवान ॥ १ ॥
तब कोउ संग साथ नहिं कोऊ, जग आयहु निरबान ।
अब हित लागि चाखि बिषया फल, फिरत अहहु बौरान ॥ २ ॥
भरमत फिरत नहीं थिर बैठत, बिसरि गयो अस्थान ।
नाहीं सुद्धि पाछिली आवत, ता तें भयो गुमान ॥ ३ ॥
हो सचेत अब जागि उलटि कै, निर्गुन करु पहिचान ।
जगजीवन जुग जुग हहु संगी, सतगुरु चरन प्रमान ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ ॥

सत्त नाम बिना मन कैसे पार तरिहौ ॥ टेक ॥
महा कठिन भर्म जार सूझै नहिं वार पार, कहौ काह करिहौ ।
जुक्ति करह चरन सरन लागि पागि, नहिं तौ फाँसि परिहौ ॥१॥
जे जे जग आये कोऊ नाहिं बाचे, धीरज कौन धरिहौ ।
जोगी जती सिद्ध साध, कोऊ नाहिं रहिहौ ॥२॥
मिलि गये अमर भये ते जग्त आस, चित्त ते सब दहिहौ ।
जगजीवन दास गुरू पास, जुगन जुग संग रहिहौ ॥३॥

॥ शब्द २७ ॥

अरे मन समुझि बूझहु ज्ञान ।
भजह अंतर मगन है कै, होउ नहिं हैवान ॥ १ ॥

(१) फिक्र ।

नाहिं वार औ पार है, करि जात नाहिं बयान।
रच्यो रचना जानि के, अस अहैं कृपानिधान ॥ २ ॥
यहि भाँति ते सुख पाइहौ, नाहिं होइ है नुकसान।
देखु नैन पसारि कै, कोउ नहिं अहै अजान ॥ ३ ॥
रहु दीन लीनं चरन ते, तजि देहु गर्ब गुमान।
दिन चारि का जग है बसेरा, अन्त खाक समान ॥ ४ ॥
मरहु जीवत जियहु कछु दिन, मौत अहै निदान।
जगजीवन ते अमर भे, गुरु चरन मन लिपटान ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

सुनु सखि तुम ते कहौं समुझाई ॥ टेक ॥
करु न गुमान बहुरि पछितैहै, काहे क परसि भुलाई।
तब तैं आइसि कौन कौल करि, अब कस सुधि बिसराई ॥१॥
जागि लागि लय नात नाह ते, देहु त्यागि दुचिताई।
एहु घर दिन दुइ चार का नैहर, परिहौ पर घर जाई ॥२॥
हँसि कहि बात घात तुम जनिहहु, रहि मन महँ पछिताई।
जगजीवन सत पिउ अंतर मिलु, काहे क जीव डेराई ॥३॥

॥ शब्द २९ ॥

अरे मन रहहु चरन ते लागि।
इत उत सकल देहु तुम त्यागि ॥ १ ॥
दुइ कर जोरि के लीजै माँगि।
सोवत उठेव मोह ते जागि ॥ २ ॥
नैन निरखि छबि रहि रस पागि।
कर्म भर्म सब जैहैं भागि ॥ ३ ॥
जगजीवन अस रहि अनुराग।
जानु आपने तब हीं भाग ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३० ॥

अरे मन जपहु मंत्र बिचारि ।
नाहिं कोइ थिर अहै यहि जग, जिवन है दिन चारि ॥ १ ॥
आवत है जग जात आहै, देखु नैन पसारि ।
जीव जंतु पसु पंछी तत्त, तैसेई नर नारि ॥ २ ॥
उठत बैठत रमत ठाढ़े, सोवत जगत सँभारि ।
डोरि ऐसी रहहु लाये, जीति लेहु सँवारि ॥ ३ ॥
त्यागि मैं तैं हठ बिबादं, रहौ नय चलि हारि ।
जगजीवन यहि जुक्ति तेनी[1], चलहु आपुहि तारि ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

जो पै नाम रहै जप लाय । तेहि के भागत कुल्ल बलाय ॥१॥
तेहि का बौरा कहै सब लोय । वहि का अंत न पावै कोय ॥२॥
बिन बोले जो रहा न जाय । तौ मन नहिं अंतर ठहराय ॥३॥
रस रसना बिरले जन पाय । अपने अंतर रहै छिपाय ॥४॥
पंडित काहे क पढ़ै पुरान । दुइ अच्छर आहै परमान ॥५॥
राति दिवस लहि करै पुकार । सत मत मंत्र न करै बिचार ॥६॥
जेहि मत अंतर मिल्यो है आई । कथा पुरान पढ़ब बिसराई ॥७॥
रटनि रसनि जेहि नाम की आई । तेहि का कछु जग नाहिं सधाई ॥८॥
नहीं तपस्या तिरथ अन्हाई । तेहि के दरस पाप कटि जाई ॥९॥
राम संत ते अंतर नाहीं । संत ते कबहूँ न्यारे नाहीं ॥१०॥
जगजीवन कहै प्रगट पुकारी । अपने मन महँ लेहु बिचारी ॥११॥

॥ शब्द ३२ ॥

साधो जब ते यह तन थाको ॥ टेक ॥
सुत जन्मत सुख आस राखिकै, फिर नहिं कोउ काहू को ।
ऐंठि चलहि डरपहि नहिं मन ते, बचन सो मुँह से भाखो ॥१॥

---

[1] से ।

छूटी कानि लोक की मन ते, नारि नीच तन ताको।
हँसै हँसावै जानि आप को, नहिं बिबेक को आँको ॥ २ ॥
नीच प्रसंग रंग ते रातहि, भ्रमत फिरत है डाको[1]।
जो देख्यो सो कहत हौं परगट, नहीं गुप्त मैं राखो ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

हम समान नहिं कोऊ भाई।
ऐसी जग की रीति देखिये, कहौं तो कहा न जाई ॥ १ ॥
ऐसी मति संसार की आहै, बातन की अधिकाई।
सपनेहु रामहिं जानहिं नाहीं, झगरा नितहि बढ़ाई ॥ २ ॥
नित उठि करहिं दुष्टई सबकै, जिय महँ नाहि डेराई।
करि बहु पाप कमाई नितहीं, सो पड़े नरक महँ जाई ॥ ३ ॥
कहैं कि हम समान को आहे, थोरे धन इतराई।
गुन त्यागिन औगुन हित लागे, डारिन सबै नसाई ॥ ४ ॥
दौलत दाम धाम सुख भूले, वह सुधि गै बिसराई।
परयो काम जब अंत न पायो, सब तजि चल पछिताई ॥ ५ ॥
समुझि बूझि हक[2] राह चलहु रे, कहत अहौं गोहराई।
जगजीवन सब झूँठे आहैं, नाम भजहु चित लाई ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

अरे मन लटकि अटकि रहु लागो।
तजु परपंच कुशब्द कुसंगति, ह्वै सचेत उठि जागी ॥ १ ॥
दुनिया अंध धंध परि भूली, कठिन मोह कै आगी।
तेहि परि जरि गे खाक उड़ाइहि, जुक्ति ते रँग रहु त्यागी ॥ २ ॥
नर नारी पसु पंछी जे जग, सब छेदा है साँगी।
बचा न कोई बचाये सोई, नाम सरन रहु भागी ॥ ३ ॥
दुइ कर जोरि यहै हे अवसर, दरस लेहु बर माँगी।
जगजीवन दे सीस चरन तर, मस्त रहहु रस पागी ॥ ४ ॥

---

(१) कूदता हुआ। (२) सत्य।

॥ शब्द ३५ ॥

दुनियाँ धंध लागि अरुझानी ।
हित मित चित्त लोभाइ रहत है, पाछिल सुद्धि हेरानी ॥ १ ॥
आयो जहँ से घर सो भूला, यहु घर रुधिर क पानी ।
ताही उद्र साज कियो करता, ताही म आनि समानी ॥ २ ॥
डोरी पोढ़ि लगाइ निरगुन ते, अगिन म भे अस्थानी ।
तेहि बल गलै जरै तन नाहीं, रहि दस मास सुखानी ॥ ३ ॥
बाहर भयो गइ सुबुद्धि वह, भे अहंकार गुमानी ।
तीनिउ पन गे नाम बिहूने, अंत बूड़ि बिनु पानी ॥ ४ ॥
केसेहु नहीं मुग्ध नर चेतत, कहै सब्द यह बानी ।
जगजीवन बचिहै पै सोई, चित्त चरन ठहरानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

बौरे समुझि देखि मन माहीं ।
माया देखि के भूल फूल नहिं, तोर नहीं कछु आहीं ॥ १ ॥
दिना चारि का अहै पेखना, कोउ काहू का नाहीं ।
सुधि बिसराय चेत नहिं कीन्ह्यो, अंत काल पछिताहीं ॥ २ ॥
देह धरे नर नाम न जान्यो, बृथा जियहि जग माहीं ।
जगजीवन भजु राम निर्भय है, रहिये चरनन माहीं ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

साधो देखहु अपने मनहिं बिचारी ॥ टेक ॥
दिना चारि का यह है खाका, सो तकि नहिं भूलहु संसारी ।
परि के सुखद भरम नहिं भटकहु, ह्वै सचेत रहु डोरि सँभारी ॥१॥
नाम बिहून नीच सब हीं ते, नीच ते नीच बहुत अधिकारी ।
जैसे खाँड़ मीठ सब हीं कहँ, अनहित लागत खारी ॥२॥
करि बिबेक सों ज्ञान आपने, जुक्ति बास करि सब ते न्यारी ।
जगजीवन अमृत रस दरसन, पीवत रहहु सो नैन निहारी ॥३॥

॥ शब्द ३८ ॥

रटहु रसना नाम अच्छर फूलु भूलु न भाई।
एक दिन दुख होइ है फिर रहैगा पछिताई ॥ १ ॥
कस न जीवत सुमिर मन महँ त्यागि दे गफिलाई।
तजहु जग परपंच निन्दा करहु ना कुटिलाई ॥ २ ॥
यहि पाप ते जम दूत कसि हैं रहोगे खिसियाई।
रहे नहिं कछु हाथ एकौ बाँधि लैकर जाई ॥ ३ ॥
लोग सबै कुटुंब सुत हित नारि भगनी भाई।
पिता प्रीति लगाय रोइहै रहैगा अरुगाई[1] ॥ ४ ॥
भाई बर्ग सँग उहौ त्यागहि देहै सब बिसराई।
दौलत धन धाम काम काज नहिं आई ॥ ५ ॥
छत्र पति औ नर पती सब झूठि है प्रभुताई।
जगजिवन दास नाम साँचा ताहि रहु लौ लाई ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

जनम पाइ जग जान्यो नाहीं।
भाग बड़े ते पाइ देहँ नर, सुधि गै भूलि पर्‌यो भव माहीं ॥१॥
देखत खात पियत गाफिल मन, सुख आनंद बहुत हरषाहीं।
डोलत बोलत चलत अपथ पथ, भरे मद अंध चेत कछु नाहीं ॥२॥
मैं तैं मारि सँभारि न आवे, अघ क्रम हित करि बहुत कमाहीं।
तेहिपर गई सुद्धि बुधि सब कर, पग थाके जब फिरि पछिताहीं ॥३॥
साधो साधि सुरति दृढ़ करिये, रहि रसि बसि छबि अंतर माहीं।
जगजिवनदास जगत तेन्यारे, गुरु के चरन बिसरि नहि जाहीं ॥४॥

॥ शब्द ४० ॥

अरे मन बौरे समुझि बिचारु।
को तैं अहसि कहाँ ते आयसि, अब हूँ डोरि संभारु ॥ १ ॥
बहसि न इत उत ह्वै थिर रहि कै, सुकिरत नाम पुकारु।
नहिं कोइ अचल सबै चलि जाइ हि, कछु नहिं अहै करारु ॥ २ ॥

---

(१) अलगाय।

काया कनक देह नर पायो, करि ले कछुक सँवारु ।
समौ यही फिरि और न पैहो, भजि कै अपुहि तारु ॥ ३ ॥
लाये प्रीति रीति ऐसी रहु, सूरति छबि न बिसारु ।
जगजीवन सतगुरु के चरनन, जानि सर्बसो वारु ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

बौरे काहे का करत गुमान ।
तोरे नाहिं कछु समुझि देखु मन, चेतहु होउ न हैवान ॥१॥
दौलत धाम काम नहिं आइहि, जब तजि है तन प्रान ।
सुत पितु नारि बंधु औ माता, तजि हैं एउ निदान ॥२॥
कस नहि सब तजि भजु वहि नामहिं, ये हैं सत्त प्रमान ।
जगजिवन दास जग से ह्वै न्यारा, अन्तर धरि रहु ध्यान ॥३॥

॥ शब्द ४२ ॥

साधो मन मन रहहु बिचार ।
निरखत रहहु परखि छबि देखत, दृढ़ करि सुरति सँवार ॥१॥
सीतल ह्वै रहु धरु सँभारि पग, तमा[1] तुजुक[2] तैं मार ।
पाँच बचाइ चलाइ लाइ रहु, आपन चहसि सँभार ॥२॥
मैं तैं ई तो अहं मद गलती[3], एइ सब करत बिगार ।
तेहिं गरुवाई बोझ ते दाबे, नाहीं होत सवार ॥३॥
कुमति प्रसंग पचीस एक सब, जानि सर्बसौ वार ।
जगजीवन सब ले न्यारे रहु, चरन औ रूप निहार ॥४॥

॥ शब्द ४३ ॥

ए मन त्यागि देहु गुमान ।
वहाँ ते करि कौल आयहु, नाहिं समुझत ज्ञान ॥ १ ॥
छिया बिंदु का पहिरि जामा, हितं भयो हैवान ।
सुधि सोइ बिसारि दीन्हेव, कर्म आइ समान ॥ २ ॥

(१) लालच । (२) शान । (३) फंद, जाल ।

भूलु नहिं तकि देखु सुख परि, अचल नहिं अस्थान।
जाइगा चल रहहि ना कोइ, बाल बूढ़ जवान ॥ ३ ॥
सिद्ध साधं जती जोगी, करहिं एऊ पयान।
अमर ते मरि जाइंगे, चलि जाहिंगे ससि भान ॥ ४ ॥
जाइगा चल रहहि ना कछु, गहहु पद निर्बान।
जगजीवन मति निर्मलं धरु, रहहु अंतरध्यान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

मनुवाँ सत्त नाम ले गाई।
दुनिया चली जात पल छिन छिन, कोऊ न थिर ठहराई ॥१॥
नहिं करार दिन घरी बरस का, केहु का जानि न जाई।
मैं तैं करि अभिमान गुमानहिं, सुख परि गे बौराई ॥२॥
कोउ काहु क नहिं मातु पिता हितु, नारि बन्धु कुटुँबाई।
ये सब अपने काम स्वार्थ के, अंत रहैं अरुगाई ॥३॥
ऐसे सूल काँट ते छेदे, नहिं कोइ लेत बचाई।
जगजीवन सब बृथा जानिकै, रहे चरन सिर नाई ॥४॥

॥ शब्द ४५ ॥

कलि जागत जे राम की कानि।
नहिं डरपत आहै मन माहीं भरम पड़े हैरानि ॥ १ ॥
देत हैं दुख जानि दुखियहिं दरद नहिं मन आनि।
होयगी दरबार फजिहत मारि बूझहिं छानि ॥ २ ॥
मारि मुगरिन मूड़ फोरहिं, मानिहै न हैवान।
जन्म कर्म नसाइ जैहै होइ है सब हानि ॥ ३ ॥
डारि देहैं नरक महँ जहँ अगिन है अधिकानि।
त्रास दुख अधिकार है कोउ नहिं उबारहि आनि ॥ ४ ॥
पछिताइ है मन समुझि करि है बड़ी दुख की खानि।
देखि ज्ञान ते परत है तस कहत अहों बखानि ॥ ५ ॥

दीन लीनं नाम गहि रहु भर्म तैं नहिं मानि।
जगजीवन बिस्वास बसि गुरु चरन रह लिपटानि ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

साधो कठिन रीति कल माहीं।
परपंचहिं माँ निसु दिन बीतत, नामहिं सुमिरै नाहीं ॥१॥
तब को हता गात नहि काहू, रह्यो उद्र जब माहीं।
सूरति लाइ सत्त माँ राखिन, जरे अगिन महँ नाहीं ॥२॥
सो बिस्वास छाँड़ि सब दीन्हो, पापै कर्म कमाहीं।
सपनेहु समुझि बूझि नहिं आवै, परि भव मोह बिलाहीं ॥३॥
जन्म देह उत्तम नर पायो, सुधि बिहून कहँ जाहीं।
गयो अकारथ नाम न जाना, नहिं काहू महँ आहीं ॥४॥
साध का सब्द मानि जो लेहैं, दाग न लागहि ताहीं।
जगजीवन अंते अंतर नहिं, भवसागर तरि जाहीं ॥५॥

॥ शब्द ४७ ॥

साधो कहत अहौं गोहराई।
दोष देइ अपने करमन का, डारत अहे नसाई ॥१॥
बेपरतोत भयो मनहीं महँ, दुबिधा रह्यो समाई।
बिसरि गयो जिन पाले उद्र महँ, अगिन ते लियो बचाई ॥२॥
अब तब सों आपुहि सब ब्याकुल, बूझि न मन महँ आई।
बँधे अहहिं अन्ध है डोलहिं, निकटहिं दूरि बताई ॥३॥
सत मत गहे रहे कौनिह बिधि, बकु मीनहिं टक लाई।
जगजीवन यह जुक्ति भक्त भे, जोति में रह्यो समाई ॥४॥

॥ शब्द ४८ ॥

साधो सुनु कल का ब्योहारा।
अपने अपने आगी पानी, जरत है सब संसारा ॥१॥
नाहीं सुधि अपने तन की है, और क करहिं बिचारा।

ज्ञानिन काहँ कहैं अज्ञानी, आपु बुद्धि अधिकारा ॥२॥
हैं बल छीन ते बली कहावैं, हम तें नहिं अधिकारा।
अहैं अदत्त कहावैं दाता, बूड़ि मुए मँझधारा ॥३॥
कुमति प्रसंग सुमति नहिं आवै, गहैं न नाम अधारा।
जगजीवन अन्तर महँ सुमिरैं, उतरैं भवजल पारा ॥४॥

॥ शब्द ४९ ॥

कोउ काहुइ दोष न देई।
जो करतब्य अहै आपुनि माँ, सो तैसहि फल लेई ॥ १ ॥
जो दुख देय दुक्ख सो पावे, सुख दे सुख तेहि होई।
हाजिर राम अहैं सबहिन महँ, गर्ब न भूलै कोई ॥ २ ॥
रावन ऐसे छत्री ह्वै गे, तेहि सम भयो न कोई।
इन जब बैर कीन्ह भक्तन तें, डारयो छिन महँ खोई ॥ ३ ॥
लंका कनक सो खेह[1] उड़ानी, जैसे मैल गधाई[2]।
पुत्र लाख सवा लख नाती, तिन के रहा न कोई ॥ ४ ॥
नर केतानि कवनि गिनती महँ, कहत सब्द सत सोई।
जगजीवन अन्तर महँ सुमिरहु, सूरति बिलग न होई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५० ॥

मन तन खाक करि के जान।
नीच तें ह्वै नीच तेहि तें, नीच आपुहि मान ॥ १ ॥
त्यागु मैं तैं दीन ह्वै रहु, तजहु गर्ब गुमान।
देतु हौं उपदेस याहै, निरखु सो निरबान ॥ २ ॥
कर्म धागा लाय बाँधा, हिंदु मूसलमान।
खैंचि लीन्ह्यो तोरि धागा, बिरल कोइ बिलगान ॥ ३ ॥
खाक है सब खाक होइहि, समुझि आपन ज्ञान।
सब्द सत कहि प्रगट भाषैं, रहहि नाम निदान ॥ ४ ॥

---

(१) ख़ाक। (२) सोने की लंका की ख़ाक इस तरह उड़ी जैसे मिट्टी या कूड़ा करकट गधे पर ढो कर ले जाने से उड़ता है।

काल को डर नाहिं तिन्ह काँ, चौथ[१] रहि चौगान।
जगजीवन दास सतगुरु के, चरन रहि लिपटान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५१ ॥

भाई रे कहा न मानै कोई।
जिहिं समुझाय के राह बतावों, मन परतीत न होई ॥१॥
कपट रीति कै करहिं बंदगी, सुमति न ब्यापै सोई।
भये नर हीन कुमारग परि कै, डारिन सबंस खोई ॥२॥
गे भरुहाय[२] तनिक सुख पाये, मैं तैं रहे समोई।
फिरि पछिताने कष्ट भये पर, रहे मनहिं मन रोई ॥३॥
देखि परत नैनन से वैसे, कठिन जीव है वोई।
जगजीवन अन्तर महँ सुमिरै, जस होई तस होई ॥४॥

॥ शब्द ५२ ॥

आपु क चीन्हहु रे भाई, बिन चीन्हे नहिं सुख पाई।
जिन जिन काहू आपु क चीन्हा, उठि तहँ कहँ पहुँचे जाई ॥१॥
वह घर बिसरा जहँ ते आयहु, परपंचहिं हिताई[३]।
जामा मैल पहिरि मद माते, मैं तैं पर बौराई ॥२॥
कछू बिचार मनहिं नहिं आयो, जहँ तहँ अरुझै जाई।
झक्का झोरी ऍंचा तानी, जहँ तहँ गये बिलाई ॥३॥
ऐसी कुगति अहै दुनिया की, नाम सरन बिन रहे पछिताई।
सतगुरु मते मंत्र जेहि दीन्ह्यो, अम्मर भे चरनन सिर नाई ॥४॥
जगजीवन जुग जुग[४] जुग[५] बंधा, निरखत है निरमल निरथाई[६] ॥५॥

॥ शब्द ५३ ॥

साधो करै विवाद नहिं कोई।
अपने मते मंत्र महँ लागहु, भजत रहहु मन सोई ॥ १ ॥

(१) चौथे लोक में। (२) उबल पड़े। (३) अच्छा लगता है। (४) जुगान जुग।
(५) जोड़ा। (६) अथाह।

कस्यप कंस रावना कौरो, तिन के रहा न कोई।
और कै कौन केतनि बपुरा है, कन प्रमान है सोई ॥ २ ॥
ज्ञानी पंडित जोगी भोगी, सिद्ध साध जो होई।
सब निर्बाह नाम तें आहे, गर्ब किहे गा खोई ॥ ३ ॥
अंतर भजे मारि कै मैं तैं, चरनन चित्त समोई।
जगजीवन भजु और आस तजि, जस होई तस होई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

बौरे नाम रटु मन लाय।
खैंचि घट में आनिये कहुँ नाहिं देत बहाय ॥ १ ॥
कुसँग संगति कुटिल बौरे संग बैठु न धाय।
ताहि पारस बेधि है तब होइ है गफिलाय ॥ २ ॥
तजहु गर्ब गुमान मैं तैं हिये रहु दिनताय[1]।
त्यागि दे बकवाद बकना गहे रह सितलाय[2] ॥ ३ ॥
देत हौं उपदेस परगट कह्यो संतन गाय।
जगजीवन बिस्वास करि कै रहु चरन लिपटाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

यहि जग महँ बंदे गरीब ह्वै रहना।
साँईं तें चित लाउ रे बंदे, तजि दे गर्ब गुमाना ॥१॥
कनक कोट लंकापति रावन, सोऊ खाक समाना।
पाँच पचीस एक नहिं आवत, ता तें फिरत भुलाना ॥२॥
सुमति मती जे छिमा साधु हैं, तिन हरि काँ पहिचाना।
जगजीवन जीवत ते प्रानी, जिन हरि चरनन ध्याना ॥३॥

॥ शब्द ५६ ॥

संतो गहहु सुरति सँभारि।
वहि समय जो किहिन है उन, सो सुधि दिह्यो बिसारि ॥ १ ॥

---

(१) दीनता। (२) शीतलता।

इहाँ तो कोउ नाहिं थिर है, रहैगा दिन चारि।
खाइ लेहै काल सब कहँ, जैसे मूस मजारि[१] ॥ २ ॥
भाइ भगनी मातु पितु, परिवार हितु सुत नारि।
अन्त कोउ ना काम अइहै, कोउ न लेहि उबारि ॥ ३ ॥
जानि बृथा मन नाम सुमिरौ, कहत सब्द पुकारि।
जगजीवन गुरु चरन गहि रहु, सोई लेहि उबारि ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

साधो सत्त नाम जपु प्यारा ॥ टेक ॥
सत्तनाम अंतर धुनि लागो, बास किहे संसारा।
ऐसे गुप्प चुप्प है सुमिरहु, बिरले लखै निहारा ॥ १ ॥
तजहु बिबाद कुसंगति सबकै, कठिन अहै यह धारा।
सत्तनाम कै बेड़ा बाँधहु, उतरन काँ भव पारा ॥ २ ॥
जन्म पदारथ पाइ जक्त महँ, आपुन मरहु सँभारा।
जगजीवन यह सत्तनाम है, पापी केतिक तारा ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

मन तुम भजहु नामहि नाम।
तारि लीन्ह्यो बहुत पतितन उत्तमं अस नाम ॥ १ ॥
गह्यो जिन परतीत करिकै भये तिन के काम।
मिटे दुख संताप तिन के भयो सुख आराम ॥ २ ॥
देखि सुख परि भूल नाहीं दौलत औ धन धाम।
अहै यह सब झूठ आसा नाहिं आवहि काम ॥ ३ ॥
चढ़हु ऊँचे नीच है कै गगन है भल ग्राम।
जगजिवन दास निहारि मूरति चरन करु बिस्राम ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५९ ॥

अरे मन करहु नाम तें प्रीति।
सीतलं सूसील मारग चलहु ऐसी रीति ॥ १ ॥

(१) बिल्ली।

त्यागि दे बकवाद निंदा आचलनि[1] आनीति[2]।
पाइ काया कनक की यह नाम बिनु ज्यों भीति ॥ २ ॥
आइ यह मृतु लोक में पछितानि करि आनीति[2]।
मारि कालं खाइ लीन्ह्यो समुझि समय बितीति ॥ ३ ॥
जुक्ति यहि जग बास करु रहु जक्त बेपरतीति।
जगजीवन बिस्वास करि गुरु चरन रहु सत सीति ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६० ॥

बैठि रहहु मन चरनन पास। काहे क भरमत फिरहु उदास ॥
राखहु दुइ कर सीस लगाइ। सोवत जागत बिसरि न जाइ ॥
निरखहु निर्मल जोति निहारि। नहिंउनकी सम कोउ अनुहारि[3] ॥
रबि ससि रूप डारि तैं वारि। रहु सत मतिगहि डारि सँभारि ॥
ब्रह्मा रहे बेद धुनि लाइ। संकर अंग में भस्म लगाइ ॥
बिस्नु जाइ मन तहाँ समानि। सो अब कहि नहिं जात बखानि ॥
जग महँ काया है उद्यान[4]। जो आये सो सबै भुलान ॥
रहनि राम गहि नाम कि आस। उदित साध ते भये प्रकास ॥
जगजीवन करु गगन मँडान। निरखहु सतगुरु सो निरबान ॥

॥ शब्द ६१ ॥

डोरि पोढ़ि लागि रहै अंतर के माहीं ॥
निरखि परखि लै लगाय लखै कोउ नाहीं।
गगन सहर लै दुकान बैठहु थिर ताहीं ॥ १ ॥
सेस ब्रह्मा बिस्नु संकर जोति निरमल वाहीं।
भानु बिन बिहान है तहँ ससि गन नाहीं ॥ २ ॥
पवन पानी तें बिहून कनि मनि बरसाहीं।
जगजीवन प्रकास सतगुरु सीस चरन रहहीं ॥ ३ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

साधो कहौं तो कहा न जाई।

(१) कुचलन। (२) अनीत। (३) सूरत। (४) सैर की जगह।

अनुचित चरित देखि दुनिया के, मन महँ रहौं चुपाई ॥ १ ॥
जहवाँ चर्चा होत नाम कै, काहू नाहिं सोहाई ।
परपंची कछु औरहि भाषैं, बहुत करहिं कुटिलाई ॥ २ ॥
सुख के फल ते खाइ न पाइन, बिष रस बहत हिताई ।
किहिन बिगार है जन्म जन्म का, परे नर्क महँ जाई ॥ ३ ॥
खाय अघाय फूलि कै बैठे, गर्ब करहिं अधिकाई ।
सुमति पराय[1] परचित ह्वै बैठे, कुमति प्रगट में आई ॥ ४ ॥
मैं तैं गर्ब गुमान त्यागि कै, नय चालहु दिनताई ।
जगजीवन डर नाहिं काल का, लेहै नाम बचाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

अरे मन करहु सत्त बिचार ।
समुझि बूझि कै जानि आपन, बृथा है संसार ॥ १ ॥
नीर बुंद तें साज कीन्ह्यो, एतो है बिस्तार ।
नगर उत्तम बनो आहै, सोइ न वारा पार ॥ २ ॥
तहाँ के परधान पाँचो, करहिं बहु अपकार ।
संग ताहि पचीस नारी[2], किहेहु नहिं ब्योहार ॥ ३ ॥
मिलि चलह बस करह तीसो[3], संग लै कै सिधार ।
जगजिवन दास गुफा गगन महँ, निरखि छबिहि नियार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

मन बिनु समझे नाहीं होय ।
महा अपरबल अहै माया, भूलि रहे सब कोय ॥ १ ॥
सुख आनँद में पर्‌यो गाफिल, डारि सर्बस खोय ।
अंत काल पछिताय रहे हैं, चले कर मलि रोय ॥ २ ॥
नाहिं काहु क अहै कोऊ, कहै आपन सोय ।
पुछिहै कछु कीन्ह करतब, बहुत फजिहत होय ॥ ३ ॥

(१) भाग गई । (२) प्रकृति । (३) पाँच तत्व और पचीस प्रकृति ।

डोरि पोढ़ि लगाय रहि जग, नाहिं पूछै कोय।
जगजिवन दास चरन गहि मन, अचल अम्मर होय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६५ ॥

मन रे प्रभु सों चित्त लगाव।
छाँड़ि दे जंजाल जक्त को, गुरु मारग माँ आव ॥१॥
गुरु के बचन हृदय धरु मूरख, ज्ञान ध्यान मन लाव।
अष्ट कमल दल भीतर राजा, पाँच तत्त को राव ॥२॥
त्रिकुटी मध्य दृष्टि करु नैनन, ताड़ी तहाँ लगाव।
मणि समान दीपक करु मनसा, जोति में जोति मिलाव ॥३॥
मन औ पवन होत जब इकतर[1], नाहीं बीच बराव।
जगजीवन के प्रभु सिर नायक, आनँद मंगल गाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

सत्त नाम सुमिरहु मन माहीं ॥ टेक ॥
यह तौ बजार है पाप पुन्न को। नेकी बदी दुइ सौदा बिकाहीं ॥
केहु नेकी केहु बदी बनिज करि। सो बिसाहि अपने घर माहीं ॥
जगजिवनदासजे नामबनिजकियो। अमर भये ते मरहीं नाहीं ॥

॥ शब्द ६७ ॥

ए मन काहे क परचो भुलाइ। काहे डारचो सुधि बिसराइ ॥
जब तुम आयहु करि इकरार। तब तुम नाहीं कीन्ह बिचार ॥
छिया बुंद माँ रह्यो समाइ। तब हूँ नाहीं कछू चेताइ ॥
जामा पहिरि भयो मस्तान। रह दस मास न किह्यो तेवान[2] ॥
जर्‍यो नहीं अगिनी महँ अंग। बाहर होत भयो चित भंग ॥
गोद लाय फिरि दूध पियाई। जुवा में जुबती बहुत हिताई ॥
कामी करम गयो सब भूले। मुक्के खात रहहु गे झूले ॥
बृद्ध भयो तब सुद्धि सँभारि। तब नहि सुमिरन जात सँवारि ॥
कफ खाँसी औ सीत सताइ। सँवरि सँवरि[3] तब रहि पछिताइ ॥

(१) एक रस। (२) फिक्र। (३) सुमिर।

उलटि लगाय रह्यो दृढ़ डोरी। कहों सिखाय रह्यो मन मोरी॥
जगजीवन सत मत गहि डोरी। ससि चकोर ज्यों रहि टक जोरी॥

॥ शब्द ६८ ॥

साधो भजहु नाम मन लाइ। बहुरि नहीं अस औसर पाइ॥
अब के चूका चूका सोइ। बहुरे नाहिं सँवारहि कोइ॥
माया मोह तकि सबै भुलाना। अंत काल सोई पछिताना॥
राजा रंक छत्र-पति सोई। बिनु वह नाम गये ते रोई॥
बुरा न मानहु कहहुँ पुकारी। देखु आपने मनहिं बिचारी॥
यहि ते उत्तम अरु कछु नाहीं। धन वै दास अहैं जग माहीं॥
जगजीवन कहि प्रगट पुकारी। जिन सुमिरा तिन लिया कुल तारी॥

॥ शब्द ६९ ॥

जग की कही जात नहिं भाई।
नैनन देखि परखि करि लीन्ह्यौ, तऊ न रह्यो चुपाई॥ १॥
आहे साँच झूँठ कहि भाषहिं, झूँठेह साँच गोहराई।
ताहि पाप संताप परैंगे, भर्म परे ते जाई॥ २॥
निंदा करत हैं जानि बूझि के, जहाँ तहाँ कुटिलाई।
जानत अहैं बनाउ ताहि का, देइहि ताहि सजाई॥ ३॥
मैं तौ सरन हौं ताहि चरन की, सूरति नहिं बिसराई।
जगजीवन है ताहि भरोसे, कहै सो तैसे जाई॥ ४॥

॥ शब्द ७० ॥

प्रात नाम सतगुरु का गावै। अंते मनुवाँ नाहिं बहावै॥
मनुवाँ बहै भजन नहिं होय। जाइहि भजन बरत सब खोय॥
दृढ़ ह्वै अंतर जपिये जापा। जेहि तें जाहिं कर्म कटि पापा॥
अजपा जाप जपै जो कोई। परगट कहौं भक्त सो होई॥
साधू भये सोई जग माहीं। जैसे पदुम कमल जल माहीं॥
जग तें न्यारे भये निरासा। जगजीवन तेहि चरन क दासा॥

॥ शब्द ७१ ॥

करहु बंदगी बंदे सोई । जेहि तें अंत भला कछु होई ॥
तजहु बिबाद न निंदा करहू । दीन होय मन अपने रहहू ॥
मत सो सत मैं देउँ बताई । भजहु नाम यहि जुक्ति तें जाई ॥
त्यागि देहु मन गरब गुमान । तौ भल मानहिं कृपानिधान ॥
साध कहत औ बेद पुरान । सत्त सब्द याहे परमान ॥
दुइ अच्छर गहहू तत सार । याहे सत मत कीन बिचार ॥
जगजीवन चरनन लिपटान । निरखहु छबि निरगुन निरबान ॥

॥ शब्द ७२ ॥

मन मदमाते फिरहिं बेहाल । अंत भयो धरि खाया काल ॥
तत्त ज्ञान मन कीन बिचार । सुकृत नाम भजु होय उबार ॥
यह उपदेस देत हौं सोई । देह धरे कछु दुक्ख न होई ॥
बेद ग्रंथ ज्ञान लियो छानी । चेत सचेत ह्वै लीजै जानी ॥
जगजीवन कहै परगट ज्ञान । उलटि पवन गहि धरि रहु ध्यान ॥

॥ शब्द ७३ ॥

जिन मन गह्यो नामहिं जानि ।
त्यागि दुबिधा रहे दृढ़ ह्वै, और नहिं उर आनि ॥ १ ॥
हर्ष सोकं नाहिं आहे, नाहिं लाभ न हानि ।
नाहिं छूटत रहत जोरे, साध भे निर्बानि ॥ २ ॥
अहैं बिरले जगत माँ यहि, कवन मैं केतानि ।
जगजीवन निर्बान भा मन, पदुम पात ज्यों पानि ॥ ३ ॥

॥ शब्द ७४ ॥

साधो दुइ अच्छर तत सार ।
सोई रटत रहो घट भीतर, और न करहु बिचार ॥१॥
जिभ्या जपु नहिं कर माला नहिं, सहज रमहु संसार ।
कहहु न प्रगट भेद काहू तें, होइहि कहे बिगार ॥२॥

सुच औ असुच न मानहु एकौ, सहज अचार बिचार ।
ऐसी रहनि गहनि करि रहिये, मिलन न लावहु बार ॥३॥
कहौं पुकार बिचार लेहु मन, और न मत अधिकार ।
जगजीवन बिस्वास करै सुनि, उतरि जाय भव पार ॥४॥

॥ शब्द ७५ ॥

मन तुम रहहु चरनन लागि ।
काहू की नहिं करहु आसा, देहु सरबस त्यागि ॥१॥
रह्यो सोवत बहुत दिन लहि, सुखद बहु हित लागि ।
गुरू जब उपदेस दीन्हो, चौंकि उठि तब जागि ॥२॥
जुगन जुग सँग नाहिं छूटै, लेहु यह बर माँगि ।
निरखि सूरति रहहु लागे, भींज रँग रस पागि ॥३॥
निरगुनं निरबान निरमल, डोरि सत मन लागि ।
जगजीवन यहि जुक्ति तें, तब जानु आपन भागि ॥४॥

॥ शब्द ७६ ॥

नाम सुमिर मन बावरे, कहा फिरत भुलाना हो ॥ टेक ॥
मट्टी का बना पूतना[1], पानी संग साना हो ।
इक दिन हंसा चलि बसे, घर बार बिराना हो ॥१॥
निसि अँधियारी कोठरी, दूजे दिया न बाती हो ।
बाँह पकरि जम लै चलै, कोउ संग न साथी हो ॥२॥
गज रथ घोड़ा पालकी, अरु सकल समाजा हो ।
इक दिन तजि चल जायँगे, रानी औ राजा हो ॥३॥
सेमर पर बैठा सुवना, लाल फर देख भुलाना हो ।
मारत टोंट भुआ उधिराना, फिरि पाछे पछिताना हो ॥४॥
गूलर कै तू भुनगा, तू का आय समाना हो ।
जगजीवन दास बिचारि कहत, सब को वहँ जाना हो ॥५॥

---

(१) पुतला ।

गुरु और शब्द महिमा

॥ शब्द १ ॥

अब जग हमहिं सिखवत आनि।
करत हैं चतुराइ बहु बिध, अहैं पाप की खानि ॥ १ ॥
कहूँ सिखि सुनि लिहिनि बातैं, कहत अहैं बखानि।
आप का कछु चेत नाहीं, भजन की है हानि ॥ २ ॥
करत नहिं अंदेस भूले, अहहिं ते अभिमानि।
अन्तहूँ पछिताइ हैं, फिर डूबिहैं बिन पानि ॥ ३ ॥
भजहु नाम गुनाह मेटहि, सरन आपनि आनि।
जगजिवन दास बचाउ इहि, गुरु सब्द कहि परमानि ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

जे जन नाम भजि बलवान।
ताहि केवल कोइ नाहीं, कौन मारै मान ॥ १ ॥
रहत निरखत पलक छिन छिन, नाम बहु निर्बान।
चाखि पीवै जिवै जुग जुग, काल देखि डेरान ॥ २ ॥
कहत कथा प्रगास करि कै, जुगन जुग का ज्ञान।
उतरि गा सो पार कामन, जानि मानि प्रमान ॥ ३ ॥
ताहि कीरति कवन गावै, कहत बेद पुरान।
जगजीवन बिस्वास करि, गुरुचरन तें लिपटान ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

यहि बन बनत नाहिं बनाये।
नाहिं है निर्बान कबहूँ, नाम बिनु बहु गाये ॥ १ ॥
पाँच एइ परपंच डारहिं, रात दिन भरमाये।
कवन हटकै कहे के नहिं, लेत अहहिं नसाये ॥ २ ॥
पास लिहे पचीस कतियाँ, खात अहहिं धराये।
जुक्ति डारी लाइ कै, तौ रमहु इन्हहिं फँदाये ॥ ३ ॥

चढ़िकै सिखरहिं[१] जिकिर[२] लावहु, सुरति मूरति लाये ।
जगजीवन निर्बान भे, ते दरस गुरु के पाये ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो अस समौ बहुरि न होई ॥ टेक ॥
लेहु बिचारि सँभारि डोरि गहि, यहि तें मंत्र न कोई ।
भजहु जानि परतीत आनि मन, सुफल सिद्ध सब होई ॥१॥
जिन नहिं जाना सो पछिताये, रहे मनहिं मन रोई ।
काह भयो नर को काया धरि, बृथा जन्म गा खोई ॥२॥
जागे भागि पागि रस माते, पल छिन नाहिं बिछोई ।
जगजीवन भवसागर तरिगे, मूरति रहे समोई ॥३॥

॥ शब्द ५ ॥

मन जग जन्मि कै भजि लेहु ।
चूकि ना यह पाय औसर, फिरि दोष ना केहु देहु ॥१॥
धाम दौलत बहुत दुनियाँ, किहिनि जानि सनेहु ।
गयो निज पछिताय कै, सब झूठ सुत हितु गेह ॥२॥
आइ जे जे जगत महँ, यहि भयो ते ते खेहु ।
नाम बिनु कछु काम का नहिं, ज्यौं गल्यो कागद मेंहु[३] ॥३॥
करहु मन परतीत अपने, चित्त चरनन देहु ।
जगजिवन दुख सुख दूर होइहि, अमर जुग जुग होहु ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

यहि जग नाम भजे तरि गये ।
आप जग महँ देह धरि कै, भक्त ते ते भये ॥ १ ॥
जौन लागी रही पुर्बुज, तौनि अंतर गये ।
ताहि रस ते प्रगट भाखौ, जबहिं मस्त भये ॥ २ ॥
रहि सँभारे डोरि लाये, दूरि दुबिधा किये ।
निरखत रहे निहारि निर्मल, सीस चरनन दिये ॥ ३ ॥

(१) चोटी । (२) सुमिरन । (३) बरसात ।

गावत हैं बेद ग्रंथहु, नाम महिमा किये।
जगजीवन बिस्वास गहे, ते अमर जुग जुग भये ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मनुवाँ जोग करै नहिं जाना।
चौक चौतरा बैठि रहै का, अन्तै करत पयाना ॥१॥
धावत आवत थिर न रहतु है, दृढ़ नहिं करत अड़ाना।
तीनि तें आस निरास होत नहिं, ता तें फिरत भुलाना ॥२॥
गुरु गुनि मंत्र लेहु बैठि सिखि, अचल रहहु ठहराना।
लावहु सीस चरन में देखि कै, झलकत छबि बिनु भाना[1] ॥३॥
पास बास रस पाइ मस्त ह्वै, सतगुरु के मन माना।
जगजीवन अम्मर ह्वै जोगी, परगट कियो बखाना ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

रहु मन नाम तें लौ लाय।
नाम तें जे नहिं राते, गये ते पछिताय ॥ १ ॥
नाहिं दौलत धाम भूलै, प्रभुइ दीन्ह बनाय।
जबहिं साईं खैंचि लेहै, कहाँ कहँ दहु जाय ॥ २ ॥
गर्ब तजहु गुमान मैं तैं, चलहु कै दिनताय।
चहहु कछु दिन भला आपन, देत अहौं लखाय ॥ ३ ॥
अहै परगट नाहिं गुप्तं, बूझि जैसी आय।
जगजीवन बिस्वास करि, गुरु चरन रहु लिपटाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

साधो कठिन है उदयान ॥ टेक ॥
नहीं है कछु अंत यहि का, आइ सब भुलान।
पियो यह रस बिसरि गावत, नाहिं करहि तेवान[2] ॥ १ ॥
मरत नहिं मैं केहू बिधि तें, करत है नुकसान।
नहिं बिचारै परे जारै, बिसरि गा औसान ॥ २ ॥

---

(१) सूरज। (२) फिक्र।

इहाँ के नहिं उहाँ के भे, बीच बीच बिलान।
समौ बीते काम का नहिं, समुझि कै पछितान ॥ ३ ॥
समुझि डोरी नाम की गहि, गगन कीन्ह पयान।
जगजिवन गुरु के पास पहुँचे, निरखि तकि निर्बान ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

प्रभु जी आपनो मोहिं जानि।
औगुनं अनेक मेटि कै, चरन सरनहिं आनि ॥ १ ॥
भ्रमत मन यहु नाहिं थिर है, होत भजन कै हानि।
मोरि बपुरे केरि कह बसि, नाहिं मानत कानि ॥ २ ॥
चहत आहौं करौं सुमिरन, अवर अवरै ठानि।
संत पर जेहिं कियो किरपा, दियो सत मत ज्ञानि ॥ ३ ॥
पाइ रस सो मस्त ह्वै गे, निर्मल भे निर्बानि।
जगजीवन गुरु मंत्र दीन्ह्यो, चरन रहे लिपटानि ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

अजब यहि नगर केर सवाँर।
अहै काया सहर जा को, नाहिं वारा पार ॥ १ ॥
दरवाज नौ दस बंद आहैं, साजि कियो करतार।
तहँ लोक तीनिउँ चौथ जगमग, सूक्षतं बाजार ॥ २ ॥
तहँ झरत मन-मनि सस्त ह्वै, लै पाइ नित्र अहार।
संतोष होइ पै तृप्ति नाहीं, मिलि होय नाहिं निनार ॥ ३ ॥
ब्रह्म बिस्नु महेस सेसं, एक चित निरधार।
निर्बान निर्मल जोति चमकै, निर्गुनं निरंकार ॥ ४ ॥
तहँ दिप्त वारौं भानु ससि की, बिदित है अबिकार।
तहँ सुद्धि नाहीं बुद्धि नाहीं, सब्द की टकसार ॥ ५ ॥
अस जानि पाइ छिपाइ कोइ कोइ, बिरल है संसार।
जगजिवन गुरु के चरन गहि रहु, आगे सुन्नंकार ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सुनु सुनु सखि री, चरन कमल तें लागि रहु री ॥ टेक ॥
नीचे तें चढ़ि ऊँचे पाउ। मंदिल गगन मगन ह्वै गाउ ॥१॥
दृढ़ करि डोरि पोढ़ि करि लाव। इत उत कतहूँ नाहीं धाव ॥२॥
सत समरथ पिय जीव मिलाव। नैन दरस रस आनि पिलाव ॥३॥
माती रहहु सबै बिसराव। आदि अंत तें बहु सुख पाव ॥४॥
सन्मुख है पाछे नहिं आव। जुग जुग बाँधहु एहै दाँव ॥५॥
जगजीवन सखि बना बनाव। अब मैं काहु क नाहिं डेराँव ॥६॥

॥ शब्द १३ ॥

बौरे समुझि देखहु ज्ञान।
महा अपरबल अहै माया, अंत काहु न जान ॥ १ ॥
पवन औ जल कियो धरती, कियो गन ससि भान।
लगे सब टकसार अपनी, खँभ बिनु असमान ॥ २ ॥
देखु नैन पसारि अचरज, प्रगट नाहिं छिपान।
जहाँ जसि है तहाँ तसि है, तहाँ तसि धर ध्यान ॥ ३ ॥
सब्द ज्ञान गरंथ बेदं, करहिं सबै बयान।
जिन कियो छिन महँ बुन्द तेनी[1], ऐसे कृपानिधान ॥ ४ ॥
दुइ अंक अजपा जपहु अंतर, तजहु सबै तेवान।
जगजीवन बिस्वास चरनं, करहिं वै औसान ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

चित्त नित्त रहै लागि पलक नाहिं छूटै ॥ टेक ॥
तागा ज्यौं उगिलि मकरी पुष्ट नाहिं टूटै।
ऐसी यह जुक्ति पाइ ध्यान नाहिं मीटै ॥ १ ॥
नैनन तें उलटि निरखि सत समाय लीटै।
संग गुरु प्रसंग ताहि कबहुँ नाहिं फूटै ॥ २ ॥

---

(१) से।

पाँच औ पचीस पाइ लाइ जुक्ति कूटै।
जगजिवनदास दरस मोती हंस चोंच लूटै ॥ ३ ॥

॥ शब्द १५ ॥

अरे मन गुरु चरन नहिं त्यागु।
हर्ष सोक बिसार, दृढ़ सत नामहीं अनुरागु ॥ १ ॥
सूत सेज न मोह माया, चौंकि चेतनि जागु।
छाँड़ि दे सब जग्त आसा, उलटि तेहि तें लागु ॥ २ ॥
गगन जगमग वारि रबि ससि, निरखि रस लै पागु।
सीस दै कर जोरि कै तहँ, भक्ति ही बर माँगु ॥ ३ ॥
अमर मरु नहिं आउ नहिं जा, रैनि बासर लागु।
जगजिवनदासं पास है रहु, सर्ब जागह भागु ॥ ४ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सब जग मैं मैं करि के भुलाना।
आनि परे बसि यहि माया महँ, सुधि नहिं पाछिल आना ॥१॥
अरुझे धंध अंध मद-माते, बिसरि गयो यह ज्ञाना।
निसु दिन परपंचहिं माँ बीतत, छिन पल राम न जाना ॥२॥
फूले धाम देखि धन दौलत, संत सब्द नहिं माना।
लीन्ह्यो खैंचि कै भान जोति ज्यौं, मिटि गा गर्ब गुमाना ॥३॥
कस न बिचारि सँभारि गहै मन, जानै सकल बिराना।
जगजीवन यहि जुक्ति जग्त रहि, तेहिं काँ नहिं नकसाना ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

करिये निरबान ध्यान चरनन लपटाई ॥ टेक ॥
इत उत देखि नैनन सों चित ना बहाई।
गगन बैठे मगन रहिये मंत्र द्यों सिखाई ॥ १ ॥
तीर्थ तहवाँ बासु मूरति छबि जल अन्हाई।
नेग कर्म भर्म छूटि छिनहिं निर्मल ह्वै जाई ॥ २ ॥

बिना नीर पिंड उदित उजियर तहँ दीपक बिनु छाई।
अनूप रूप सुन्दरं ससि भानु जाहिं छिपाई ॥ ३ ॥
अस कर हम न साखि सो गुरु सत ना बिसराई।
जगजिवनदास संत गुरुं प्रगटहिं गोहराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १८ ॥

अरे मन चरन तें रहु लागि।
जोरि दुइ कर सीस देकै, भक्ति बर ले माँगि ॥ १ ॥
और आसा झूठि आहै, गर्म जैसे आगि।
परहिंगे सो जरहिंगे, पै देहु सर्ब तियागि ॥ २ ॥
समौ फिरि एहु पाइहै नहिं, सोउ नहिं गहि जागि।
चेतु पाछिल सुद्धि करिकै, दरस रस रहु पागि ॥ ३ ॥
कठिन माया है अपरबल, संग सब के लागि।
सूल तें कोइ बचे बिरले, गगन बैठे भागि ॥ ४ ॥
भर्म नहिं तहँ भयो निर्भय, सत्त रत बैरागि।
जगजीवन निर्बान भे, गुरु दया जागे भागि ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

जब सुन सब्द मानै कोय ॥ टेक ॥
लाभ दिन दिन सुखित होवै, हानि कबहुँ न होय।
देखि करि तेहिं मुक्ति नाहीं, नर्क परिहै सोय ॥ १ ॥
सब्द भाखै करै साँचा, सत्त सत्त समोय।
पहुँच गे वे गगन घर माँ, काल खाय न कोय ॥ २ ॥
तहँ बैठि है निर्बान सतगुर, चरन गहि रहि सोय।
जगजिवन ते अमर जुग जुग, आवा गवन न होय ॥ ३ ॥

॥ शब्द २० ॥

मन मैं मारि आगम जान।
तोरु तैं यह बज्र धागा, होइहै नकसान ॥ १ ॥
गर्ब और गुमान छाँड़हु, तजहु और तेवान।

नाहिं थिर सब खाक होइहि, चलत जैसे भान ॥ २ ॥
पाँच और पचीस लैकै, साँच भीतर आन ।
लाव धागा रहौ लागा, गगन कर मंडान ॥ ३ ॥
तहाँ सतगुरु बैठु तेहि ढिंग, निरखि करु पहिचान ।
जगजिवन चरनन सीस दै रहु, अनत करु न पयान ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

अरे मन रहहु रटना लाइ ॥ टेक ॥
नाहिं छूटै प्रीति कबहूँ, छाँड़ि दे गफिलाइ ।
जग्त माया जार बंधा, अंध सूझि न आइ ॥ १ ॥
ह्वै सचेत अचेत हो नहिं, लेहु आपु बचाइ ।
चढ़हु गढ़ जहँ गगन गुरु हैं, बैठु थिर ह्वै जाइ ॥ २ ॥
है मवासं पास चरनन, काल का डर नाहिं ।
जगजिवनदास निहार मूरति, तकहु इक-टक लाइ ॥ ३ ॥

॥ शब्द २२ ॥

मन इह नाम बिसरि न जाय ॥ टेक ॥
मूल मंत्र इहै आहै, दियो ज्ञान बताइ ।
नाम समता नहीं है कछु, अंत काहु न पाइ ॥ १ ॥
नाम बल ससि भानु रथ, चढ़ि अधर गगन उड़ाइ ।
नाम को बल पाइ हनुमँत, लंक जारयो जाइ ॥ २ ॥
सेस ब्रह्मा बिस्नु संकर, रहे ताड़ी लाइ ।
जगजीवन बिस्वास करि, गुरु चरन रहु लिपटाइ ॥ ३ ॥

॥ शब्द २३ ॥

मन तुम करहु गगन मँडान ।
त्यागि दे सब जग्त आसा, निरख सो निर्बान ॥ १ ॥
सिद्ध साध औ कहत जोगी, भला है अस्थान ।
मारि आसन बैठु दृढ़ ह्वै, अनत करु न पयान ॥ २ ॥
बैठि रहिये पास सतगुर, देखि सिखिये ज्ञान ।

रहहु ऐसे लागि जुग जुग, मानिये परमान ॥ ३ ॥
देखि नैनन चाखि अमृत, रहिये है मस्तान ।
जगजीवन सतगुरु चरनन, सीस करु कुरबान ॥ ४ ॥

॥ शब्द २४ ॥

गुरु बलिहारियाँ मैं जाउँ ॥ टेक ॥
डोरि लागी पोढ़ि, अब मैं जपहुँ तुम्हरा नाउँ ।
नहीं इत उत जात मनुवाँ, गगन बासा गाउँ ॥ १ ॥
महा निर्मल रूप छबि सत, निरखि नैन अन्हाउँ ।
नहीं दुख सुख भर्म ब्यापै, तत्त नीचे आउँ ॥ २ ॥
मारि आसन बैठि थिर है, काहु नाहिं डेराउँ ।
जगजिवन निर्बान भे, सत सदा संगी आउँ ॥ ३ ॥

॥ शब्द २५ ॥

मोर दिल भयो मतवारा ।
मैं तो प्रभु के चरनन लाग्यो, बाउर कहै संसारा ॥ १ ॥
अधर बैठि अमृत रस पीवौं, नाम के करत पुकारा ।
जगजीवन सतगुर को भेंटे, उतरे भव जल पारा ॥ २ ॥

॥ शब्द २६ ॥

साधो सुमिरन भजन करो ।
मन महँ दुबिधा आनहु नाहीं, सहजहिं ध्यान धरो ॥ १ ॥
धीरज धरि संसय नहिं राखहु, नाम भरोसे रहो ।
जगजीवन समगुरु को भेंटो, भवजल पार तरो ॥ २ ॥

॥ शब्द २७ ॥

देखो री जोगिया रहत कहाँ ।
तीनि लोक महँ माया बसत है, चौथे लोक रहत है तहाँ ॥१॥
अरध सिंहासन बनो अहै री, जोगी बैठि रहत है तहाँ ।
जगजीवन संतन महँ खोजो, कर बिचार अपने मन महाँ ॥२॥

॥ शब्द २८ ॥

यहु मन गगन मंदिल राखु।
सब्द की चढ़ देखु सीढ़ी, प्रेम रस तहँ चाखु ॥ १ ॥
रहहु दृढ़ करि मारि आसन, मंत्र अजपा भाखु।
मते गुरुमुख होहु तहवाँ, जगत आस न राखु ॥ २ ॥
पाँच बसि कसि बैठि रहिकै, मानु कबहुँ न माखु।
ईस अहहि पचीस इन कै, सदा मन हित वाखु ॥ ३ ॥
देहु सब बिसराइ करिकै, एही धंधे लागु।
जगजिवनदास निरखि करिकै, नयन दर्सन माँगु ॥ ४ ॥

॥ शब्द २९ ॥

नामहिं बड़े भाग तें पायो।
नेग जन्म लहि भर्मत बीता, सूझि बूझि नहिं आयो ॥ १ ॥
अब की सँवारु इहै करै का, जा बिगार करि आयो।
किरपा करि निरबाह करन कहँ, अवसर भल इह पायो ॥ २ ॥
हूक चूक होत मन मोरे, जब तब रहि बिसरायो।
अब निःसंक नाहिं डेर लागत, जब तें मंत्र सिखायो ॥ ३ ॥
अजपा जपि चढ़ि गयो गगन कहँ, सतगुर दरस दिखायो।
जगजीवन बिस्वास बास भे, चरनन सीस लगायो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३० ॥

मैं देख्यों निरखि निहारि सुरति पर वारी ॥ टेक ॥
भा बिस्वास पास बासा करि, दुनिया सकल बिसारी।
चमकत दृष्टि बरनि नहिं आवै, बिनु दीपक उजियारी ॥ १ ॥
नीर पिंड बिनु रूप बिराजत, रबि ससि की छबि वारी।
अस निर्गुन निर्बान अमूरति, सिव बिरंच लाये ताड़ी ॥ २ ॥
सब्द कहत अस प्रगट पुकारे, बिरले कोउ जन लेहिं बिचारी।
जगजीवन के सतगुरु समरथ, सीस ताहि के चरनन वारी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

चरनन में लागी रहिहौं री ॥ टेक ॥
और रूप सब तिरथ बतावै, जल नहिं पैठ नहैहौं री ।
रहिंहौं बैठि नयन तें निरखत, अनत न कतहूँ जैहौं री ॥ १ ॥
तुमहीं तें मन लाइ रहिहौं, और नहीं मन अनिहौं री ।
जगजीवन के सतगुरु समरथ, निर्मल नाम गहि रहिहौं री ॥ २ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सुरति बसी मन नाम फिरत मतवारी ॥ टेक ॥
चित तौ लाग्यो अपने पिय सौं,
डग मग पाँव न जात सँभारी ।
अंतर देखि चुपाइ रहिउँ मैं, सूरति तुम्हरी रहिउँ निहारी ॥ १ ॥
सूरति पर मूरति वह साँची, सो मैं रहि हौं नाहिं बिसारी ।
जगजीवन सतगुरु कै मूरति, सो मैं रहिउँ सँभारी ॥ २ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

बनत न कतहूँ अनत न जाय । देखहु चरन सरन ठहराय ॥ १ ॥
नीचे तकत ऊँचे काँ जाय । गगन मंडल माँ तब ठहराय ॥ २ ॥
बिन कर चरन पकरि कस जाय ।
सिर नहिं माथ रहै लपटाय ॥ ३ ॥
स्रवन बिहुना सुनि धुनि आय ।
नैन बिहून दरस तकि पाय ॥ ४ ॥
जगजीवन अस मत जेहिं आय ।
मिलि सत मत तब सिद्ध कहाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

साधौ कहै तौ कहा न जाय ।
आपन घर मत कोइ न बूझै, हमहिं कहै समुझाय ॥ १ ॥
पंडित जोगी दंडी तपसी, बहु बिबाद करैं धाय ।
नाहिन नाम की ओर गही तिन्ह, तिरथ बर्त लौ लाय ॥ २ ॥

नाहिन काहू जीत कहाँ लहि, कहँ लहि कहै समुझाय।
करै जाइ तस जेहिं जस भावै, भुग्तै तैसे आय ॥ ३ ॥
बिरला कोई भजन करतु है, चाल चलै दिनताय।
जगजीवन सतगुरु की मूरति, चरन रहे लपटाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

महिमा प्रभु मो सों बरनि न जाय ॥ टेक ॥
अनहद बानी मूरति बोलै, सुनहु संत चित लाय।
अनहद ताल पखावज बाजै, तहाँ सुरति चलि जाय ॥ १ ॥
अवर न रूप कहाँ लहि बरनौं, सब छबि रहे समाय।
जगजीवन साँई कहँ लहि बरनौं, रहे चरन चित लाय ॥ २ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

तीरथ ब्रत की तजि दे आसा।
सत्त नाम की रटना करि कै, गगन मँडल चढ़ि देखु तमासा ॥१॥
ताहि मँदिल का अंत नहीं कछु,
रबी बिहून किरिन परगासा।
तहाँ निरास बास करि रहिये,
काहे क भरमत फिरै उदासा ॥ २ ॥
देउँ लखाय छिपावहुँ नाहीं, जस मैं देखेउँ अपने पासा।
ऐसा कोऊ सब्द सुनि समुझै,
कटि अघ कर्म होइ तब दासा ॥ ३ ॥
नैन चाखि दरसन रस पीवै,
ताहि नहीं है जम की त्रासा।
जगजिवन दास भरम तेहि नाहीं,
गुरु के चरन करै सुक्ख बिलासा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

चलु चढ़ीं अटरिया धाई री।
महल म टहल कर नहिं पाई, करिये कौन उपाई री ॥ १ ॥

यहँ तौ बैरी बहुत हमारे, तिन तें कछु न बिसाई री।
पाँच पचीस निस दिन संतावहिं, राखा इन अरुझाई री ॥ २ ॥
साँईं तो निकट बैठि सुख बिलसहिं,
जोतिहि जोति मिलाई री।
जगजीवन दास अपनाय लेहिं वै, नाहीं जीव डेराई री ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

नाम बिनु केहि काम का कह जीवनं संसार ॥ टेक ॥
आपनो जग कहत आहै कठिन माया जार ॥ १ ॥
लाग धागा गरे बाँधे नाहिं छूटनहार ॥ २ ॥
दास बास बिस्वास जगतं निरखि रूप निहार ॥ ३ ॥
जगजीवन कोइ अहैं बिरले उतरि होवैं पार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

नाम रटि रटत तृकुटी गगन चढ़ि आयऊँ ॥ टेक ॥
मैं तैं पचीस पाँच डोरि एक लायऊँ।
मैं तैं पचीस पाँच डोरि एक लायऊँ।
मैं तौ रँग संग भयो सीस ताहि नायऊँ ॥ १ ॥
सतगुरु से पाय भेद जगत नाहिं आयऊँ।
मिटेव अँधकार, ज्यों भानु भे प्रकास,
निरखि दृष्टि आयऊँ ॥ २ ॥
जुगति किये रहै ऐसो प्रगट सो बतायऊँ।
जगजिवन दास अम्मर भे जुग जुग जस गायऊँ ॥ ३ ॥

॥ शब्द ४० ॥

भक्त जक्त त्यागि जागि लागि चरन रहु रे ॥ टेक ॥
जग प्रसंग ध्यान भंग जानि छानि तजु रे।
रहु इकंत तंत[1] लागि जानि नाम गहु रे ॥ १ ॥
पाँच औ पचीस डोरि पोढ़ि बाँधि रहु रे।
साधि चित्त नित्त भाव चरनन गुरु परु रे ॥ २ ॥

(१) तत्व।

रहि निहारि निरखि रूप अनत नाहिं टरु रे।
जुक्ति जोग भक्ति का उपदेस ऐसे करु रे ॥ ३ ॥
पाय खा अघाय अमी जुग जुग नहिं मरु रे।
जगजिवन दास आस राखु नाहिं फाँस परु रे ॥ ४ ॥

कर्म भर्म निषेध और उपदेश सतगुरु व शब्द भक्ति का।

॥ शब्द १ ॥

हे मन थकहु तो तकहु निसान।
बैठहु मंडफ लाय धुनि धूनी, अनत करु न पयान ॥ १ ॥
पाँच पचीस लगाय धागा, बाँधि रहु ठहरान।
नैन दरसन नीर पीवै, चाखि भे मस्तान ॥ २ ॥
नाहिं दुख सुख पवन पानी, नाहिं ससि नहिं भान।
नाहिं ब्रह्मा सिवं सक्ती, निर्गुनं निरबान ॥ ३ ॥
दियो दुइ कर सीस चरनन, नाहिं भावै आन।
जगजीवन ते भये गुरमुख, अमर जोग दृढ़ान ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

कर न सुमिरिनो लेहु, अंतर धुनि लावहु रे।
मैं तैं माला डारि देहु, तुम दोन लीन ह्वै गावहु रे ॥ १ ॥
जो मनुवाँ करि खाक रहहु, वहि काहेक लगावहु रे[१]।
चंदन चरन टेक रहु निर्भय, काहेक भौजल आवहु रे ॥ २ ॥
एहु उपदेस कहि तुमहिं सुनावहुँ, मन अँदेस बिसरावहु रे।
जगजीवन दास निहारि निरख कै, सुरति म सुरत मिलावहु रे ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साँईं मोहिं सब कहत अनारी।
हम कहँ कहत अजान अहैं येइ, चतुर सबै संसारी ॥ १ ॥
अहै अभेद भेद नहिं जानत, सिखि पढ़ि कहत पुकारी।
देखि करत सो आवत नाहीं, डारिन भजन बिगारी ॥ २ ॥

---

(१) जब मन को खाक कर डाला तो भभूत लगाने का क्या काम है।

कहा कहौं मन समुझि रहत हौं, देख्यौं दृष्टि पसारी ।
समुझाये कोइ मानत नाहीं, कपट बहुत अधिकारी ॥ ३ ॥
बिरले कोइ जन करत बदगी, मैं तैं डारत मारी ।
जगजीवन गुरु चरन सीस दै, निरखत रूप निहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

संतन कह्यौ रमज[1] से बानी ।
तत्त सार बताय दीन्ह्यो, काहू भेद न जानी ॥ १ ॥
बहुतक अंधे बघे माया, आहहिं गर्ब गुमानी ।
समुझाये जे समुझत नाहीं, होइहि तिन की हानी ॥ २ ॥
साधन की गति कहि नहिं आवै, केहि मुख कहौं बखानी ।
जगजीवन चरनन तें लागे, निरखि जोति निर्बानी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

दुनियाँ हमहिं सिखावत ज्ञान ।
आपु तौ भवजाल भूले, हमहिं कहै हैवान ॥ १ ॥
गुनन तें मन गूँथि करि कै, करत प्रगट बखान ।
नाहिं बूझत सूझ नाहीं, लागि नहिं हिय बान ॥ २ ॥
धाइ धाइ सिखाइ औरै, दोऊ भरम भुलान ।
करत अहिं अस देखि नैनन, प्रगट भाखौं ज्ञान ॥ ३ ॥
बहुत फूलि कै भूलि परि हाँहैं, होइ है नुकसान ।
जगजीवन जानत अहै सब, नाहिं कछू छिपान ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

साधो नाम भजन जिन ठाना ।
केतौ कोइ समुझाय सिखावत, मनहिं न आवत आना ॥ १ ॥
तीरथ ब्रत और दान तपस्या, नाहीं एकौ माना ।
सब बिसराइ मनहिं नहिं आवत, ध्यान धरे निर्बाना ॥ २ ॥
निरखत निर्मल जोति सदा वै, तज दिये पानि[2] पखाना[3] ।

(१) भेद । (२) पानी । (३) पत्थर ।

तस आचार बिचार हैं उनके, काहू गति नहिं जाना ॥ ३ ॥
सतगुरु पासहिं बास किहे हहिं, नाहीं और तेवाना[१] ।
जगजीवन गुरु चरनन लागे, आपुहिं करैं निभाना[२] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

साधो बिन किरपा भक्ति न होय ।
रात दिन जो करै बदगी, कबूल परै नहिं सोय ॥ १ ॥
जज्ञ दान उदान[३] बास करै, कंदमूरि भखि सोय ।
बरत रहै अस्नान तीरथ, भक्ति तबहुँ न होय ॥ २ ॥
पढ़ै चारो बेद बिद्या, ज्ञान कबिता होय ।
मौन ह्वै कै लाय तारी, भक्ति तबहुँ न होय ॥ ३ ॥
काया कासी जाय कल्पै, डारि सर्बस खोय ।
द्वारिका भुज लेय छापा, भक्ति तबहुँ न होय ॥ ४ ॥
मुड़ाइ मूड़ औ पहिरि माला, भ्रमत फिरै सब कोय ।
घीच[४] तूरै करि तपस्या, भक्ति तबहुँ न होय ॥ ५ ॥
पँच अग्नि तन दहि झूल झूला, पवन भच्छै सोय ।
बाँह तूरे रहहि ठाढ़े, भक्ति तबहुँ न होय ॥ ६ ॥
लाइ अंग बिभूति जोगी, नारि रत नहिं होय ।
तजै माया मुलुक सर्बस, भक्ति तबहुँ न होय ॥ ७ ॥
कृपा भै दिनताइ आई, सुमन मन भा सोय ।
जगजिवन डोरी लाय पोढ़ी, रह्यो चरन समोय ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

साधो नाम चाखि बौराना ॥ टेक ॥
लागे रहैं चरन तें निसि दिन, भावै और न आना ।
तजो अचार बिचार जग्त को, सब तें रहि बिलगाना ॥ १ ॥

---

(१) फ़िक्र । (२) निबाह (३) पाँच मुख्य पवन जिन से शरीर की स्थिति है यह हैं—प्रान, अपान, व्यान, उदान, समान । (६) प्रानायाम में चिबुक लगाना ।

उन कै गति कोउ जानत नाहीं, को करि सकै बखाना।
मरि कै अमर भये हैं सोई, भये हैं सिद्ध निमाना॥ २॥
हेत आस नहिं राखैं काहू, गुरु निरखहिं निरबाना।
जगजीवन वै साइँ मिलिगे, परगट करहुँ बखाना॥ ३॥

॥ शब्द ९ ॥

साधो देखहु अंतर माहीं।
भाँवरि भवन दिहे रहि रहिये, अवर अहै कछु नाहीं॥ १॥
बड़ बिस्तार अहै काया का, अंत खोज कछु नाहीं।
जिन खोजा पाया काया महँ, बहुतेक भर्म भुलाहीं॥ २॥
पाँच पचीस डोरि बसि करिये, चढ़ु गुरु आहै ताहीं।
जगजीवन निर्बानी मूरति, मिलिगे सूरत माहीं॥ ३॥

॥ शब्द १० ॥

बहुतक देखी देखा करहीं।
जोग जुक्ति कछु आवै नाहीं, अंत भर्म महँ परहीं॥ १॥
गे भरुहाइ[१] अस्तुति जेइ कीन्हा, मनहिं समुझि नापरई।
रहनी गहनी आवै नाहीं, सब्द कहे तें लरई॥ २॥
नहीं बिबेक कहै कछु औरै, और ज्ञान कथि करई।
सूझि बूझि कछु आवै नाहीं, भजन न एकौ सरई॥ ३॥
कहा हमार जो मानै कोई, सिद्धि सत्त चित धरई।
जगजीवन जो कहा न मानै, भार[२] जाय सो परई॥ ४॥

॥ शब्द ११ ॥

साधो भक्ति सहजहि ध्यान।
मनहिं ब्यापत साँचु नाहीं, कहा प्रात अन्हान॥ १॥
कहा कंठो कंठ बाँधे, सेल्हि मुद्रा कान।
कहा माला लै सुमिरनी, हिये नहिं पहिचान॥ २॥

---

(१) उबल पड़े। (२ भाड़।

कहा तिलक लिलार दीन्हे, गूदरी निरबान।
कहा भस्महिं अँग लाये, नाम नाहीं जान ॥ ३ ॥
कहा ब्रत तप दूध पीवे, त्यागि गृह बिलगान।
कँदमूरहिं खाहिं जंगल, नाहि जो बहु ज्ञान ॥ ४ ॥
ठाढ़ बैठे घींच तूरहिं, तकत हैं असमान।
बृथा सब परतीत बिनु है, भ्रम भूले हैवान ॥ ५ ॥
खोज काया करहु थिर मन, त्यागि कपट सयान।
भजहु अंतर नाम वाहै, राम सत्त प्रमान ॥ ६ ॥
लाउ रसना नाहिं बिसरै, प्रगट करु न बखान।
जगजीवन बिस्वास निरमल, होहु जैसे भान ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

बौरे मन को नहिं भरमाव।
तीन लोक के करता साँईं, ताहि सों ध्यान लगाव ॥ १ ॥
तीरथ कोटि साज जिन कीन्हेउ, सो संतन हिये आव।
चढ़ि कै गगन देखु सूरति को, ताहि काँ सीस नवाव ॥ २ ॥
सूरति सत्त प्रेम रस पानी, ताहि में चित अन्हवाव।
अमर होहु भवसागर उतरहु, नहिं आवहु नहिं जाव ॥ ३ ॥
सतगुरु सत्त कहा यहि बानी, अलख नाम धुनि लाव।
जगजीवन साहब की छबि में, आपनि सुरति समाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मन गृह ग्राम यह अस्थान।
सात दीप नव खंड पृथ्वी, सिर उर तेहि माँ जान ॥ १ ॥
तीनि लोक बिस्तार हैं तेहिं, रमत गन ससि भान।
चौथ इहै बनाय दीन्ह्यौ, संत राखत ध्यान ॥ २ ॥
दरवाज नौ दस प्रगट आहैं, काहु तें न छिपान।
रमत तेहि के ब्रह्म भीतर, नहीं कहुँ बिलगान ॥ ३ ॥

काया भीतर खेल खेलहु, अनत करु न पयान।
बाहर तौ सब देखिबे को, घट अहै सो प्रमान॥ ४॥
कहत हौं उपदेस छोंड़ु, अँदेस रहु ठहरान।
जगजीवन निर्बान सतगुरु, चरन रहु लिपटान॥ ५॥

॥ शब्द १४ ॥

मन तुम रहहु चरन सरनाई।
यहि काया का अंत खोज नहिं, काहू भेद न पाई॥ १॥
तीनि लोक काया रचि दीन्ह्यौ, चौथा दीन्ह बनाई।
तीरथ कोटि अहैं याही में, संतन दीन्ह बताई॥ २॥
अजपा जाप जपत रहु निसु दिन, प्रगट न देहु जनाई।
इहि तें मन्त्र नहीं है एको, भर्म न परहु भुलाई॥ ३॥
सेस महेस बिस्नु औ ब्रह्मा, रहे हैं ध्यान लगाई।
निर्गुन निरंकार वह मूरति, तेहि माँ रहौ समाई॥ ४॥
रहु ठहराय गगन करु बासा, निरखि देखु निरथाई।
जगजीवन सतगुरु की सूरति, रबि ससि छबि छिपि जाई॥ ५॥

॥ शब्द १५ ॥

साधो भेष बाँधि गफिलाने।
रहै अभेष भेद तब छूटहि, सहज रीति मन जाने॥ १॥
जब तें माला कंठी पहिरी, गर्ब भयो इतराने।
साखी सब्द बहुत सिखि लीन्हेउ, बाद बिबादहिं ठाने॥ २॥
परखहि नाहिं फिरहिं परखावत, आपन मंत्र बखाने।
भजहिं नाहिं बसि परे मोह के, अन्त काल पछिताने॥ ३॥
बहुतक देखे कपट रीति महँ, दाम के काम सयाने।
अहैं असिद्ध मति करैं सिद्ध का, एहि परि पाप भिलाने॥ ४॥
दीन लीन होइ सहजहिं सुमिरै, सुमति सील रहे माने।
जगजीवन तब भक्त कहावै, ते एहि कलि ठहराने॥ ५॥

॥ शब्द १६ ॥

कोउ बिन भजन तरिहै नाहिं।
करै जाय अचार केतौ, प्रात नित्त अन्हाहिं ॥ १ ॥
दान पुन्यं करि तपस्या, बर्त बहुत रहाहिं।
त्यागि बस्ती बैठि बन महँ, कंदमूरहिं खाहिं ॥ २ ॥
पाठ करि पढ़ि बहुत बिद्या, रैन दिनहिं बकाहिं।
गाय बहुत बजाइ बाजा, मनहिं समुझत नाहिं ॥ ३ ॥
करहिं स्वाँसा बंद कष्टित, भाँड़ की गति आहिं।
साधि पवन चढ़ाय गगनहिं, कमल उलटै नाहिं ॥ ४ ॥
साध नहिं केहु कीन ऐसे, लिखे बहुत कहाहिं।
प्रीति रस मन नाहिं उपजत, परे ते भव माहिं ॥ ५ ॥
जस सँजोग बियोग तैसे, तत अच्छर दुइ आहिं।
रटत अंतर भेंट गुरु तें, मंत्र अजपा माहिं ॥ ६ ॥
कहौं प्रगट पुकारि जहि के, प्रीति अंतर आहिं।
जगजिवन दास रीति अस, तब चरन महँ मिलि जाहिं ॥ ७ ॥

॥ शब्द १७ ॥

चरन सरन रहौं, कहूँ अंतै नाहिं जाऊँ ॥ टेक ॥
रहौ पास किहे बास, त्यागि सर्ब और आस,
भजत रहौं नाऊँ ॥ १ ॥
तीनि त्यागि चौथ तत्त, पाँह बैठि निरभय है,
तकौं ना उराऊँ[1] ॥ २ ॥
मारि आसन रहौं बैठि, नैनन टक लाय डोरि।
निरमल सत नीर पाइ, नित्त सो अन्हाऊँ ॥ ३ ॥
जुग जुग जग बैठि संग, मगन रसं तेहि रंग।
जगजिवन दास सतगुरु सो, चेला ताहि क आऊँ[2] ॥ ४ ॥

---

(१) दूसरी ओर। (२) हूँ।

॥ शब्द १८ ॥

सब खाकहि मिलिहै रे भाई ।
किया चहहु कर लेहु बंदगी, मन तें छाँड़हु गफिलाई ॥ १ ॥
भूलै फूलै देखि न दौलत, काहु क संग न जाई ।
पैदा भये निपैद भये ते, केहु की खबर न केहू पाई ॥ २ ॥
कहँ धौं गये कहाँ धौं वह घर, कहाँ जाइ धौं रहे समाई ।
छत्री जोधा जोगी दानौ[1] काल लीन्ह सब खाई ॥ ३ ॥
बचा नहीं कोउ ना कोइ बचिहै, सब्द कहत गोहराई ।
जगजिवन दास नाम गहि उबरे, सतगुर चरनन सरनाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १९ ॥

बहु पद जोरि जोरि करि गावहिं ।
साधन कहा सो काटि कपटि[2] के, अपन कहा गोहरावहिं ॥ १ ॥
निंदा करहिं बिबाद जहाँ तहँ, बक्ता बड़े कहावहिं ।
आपु अंध कुछ चेतत नाहीं, औरन अर्थ बतावहिं ॥ २ ॥
जो कोउ नाम का भजन करत है, तेहि काँ कहि भरमावहिं ।
माला मुद्रा भेष किये बहु, जग परमोधि[3] पुजावहिं ॥ ३ ॥
जहँ ते आये सो सुधि नाहीं, झगरे जन्म गँवावहिं ।
जगजीवन ते निन्दक वादी, बास नर्क महँ पावहिं ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

अन्तर जो कोउ नाम धुनि लावै ।
अजपा रसना सदा लागि रहै, नाहीं भेद बतावै ॥ १ ॥
इत उत आस निरास होय जब, मन अस्थिर लै पावै ।
रहै ठहराय सिखर ह्वै सीतल, निरखि रूप तब आवै ॥ २ ॥
देखत अहै सुनत है सरवन, काहेक कहि गोहरावै ।
भयो मस्त रस पाय अमृतै, काहेक घंट बजावै ॥ ३ ॥

---

(१) राक्षस । (२) काट छाँट कर । (३) राजी कर के ।

तब बैराग भयो अनुरागी, काल निकट नहिं आवै।
जगजीवन सतगुरु की किरपा, नहिं आवै नहिं जावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

अब तौ ज्ञान कथै को भाई।
सब्द कहत सो मानत नाहीं, केतो कहि समुझाई ॥ १ ॥
भेष जगत सब सब भूले मैं तैं, सुमति न हिये समाई।
बहु जलधर बरषहिं पखान पर, सोखत नाहीं जाई[1] ॥ २ ॥
देखि परत सब हिये सबहिन का, सुरति नाहिं ठहराई।
जहाँ तहाँ भरमत बीतत है, नाहीं भजन दृढ़ाई ॥ ३ ॥
बहु अभिमान गुमान गर्ब तें, करहिं बाद अधिकाई।
सो करतूति भुगुति है काया, परै नर्क में जाई ॥ ४ ॥
कोइ कोइ जन मन को थिर राखैं, अन्तर रटनि लगाई।
जगजीवन ते भक्त कहाये, सतगुरु लीन्ह सिखाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

और कछु मंत्र नाम सम नाहिं।
चलै न जिभ्या मुख नहिं बोलै, रटत रहै मन माहिं ॥ १ ॥
कोउ कासी कोउ जात द्वारके, हित कर तीरथ न्हाहिं।
कोउ व्रत दान अचार करै बहु, कोऊ तपस्यहिं जाहिं ॥ २ ॥
तूरत बाहैं घींच गगन मुख[2], उलटी धूम घुटाहिं[3]।
पीवत दूध दूब फल बन के, कंद मूरि खनि[4] खाहिं ॥ ३ ॥
कोउ रहैं ठाढ़े कोउ रहैं बैठे, कोउ होइ जोगी जोग कराहिं।
कोउ जागैं निसि दिन नहिं सोवैं, कोउ दम साध रहाहिं ॥ ४ ॥
जज्ञ राग रस नितं रंग कवि, ज्ञानी ज्ञान कथाहिं।

---

(१) जैसे बादल कितनाहीं मेंह बरसाते हैं पर पत्थर के भीतर नहीं धसता इसी तरह जगत भेष को जितना चाहे उपदेश करो पर हृदय में असर नहीं करता। (२) ऊर्द्धबाँहु आसमान की तरफ बाँह को उठा कर सुखा डालते हैं। (३) उलटे टंग कर धुआँ पीते हैं। (४) खोद कर।

पंडित कथा पुरान बखानहिं, पढ़तै जन्म सिराहिं[1] ॥ ५ ॥
माला मुद्रा भस्म लगावहिं, चंदन तिलक कराहिं।
सालिग्राम औ पीतर पुतरी, पूजि पूजि हरषाहिं ॥ ६ ॥
एह सब करै सरै न भजन बिन, मन थिर होवै नाहिं।
परहिं आय भौजाल फेरि फेरि, समुझि समुझि पछिताहिं ॥ ७ ॥
सहज सुभाव रहै कौनिउ बिधि, अंतर बिसरै नाहिं।
जस जोगी तस अहैं सँजोगी, भक्त सोई जग माहिं ॥ ८ ॥
सदा बिस्वास नाम की आसा, तज बिबाद बक ताहिं।
जगजीवन सतगुर के चरनन, अन्तर अन्तर नाहिं ॥ ९ ॥

॥ शब्द २३ ॥

सब जग देखि देखि कै भूला।
साधन कै गति पावत नाहीं, पड़े भर्म के सूला ॥ १ ॥
करत साध सो करत देखिकै, मन आपन नहिं तौला।
दिन दुइ चारि दिखाइन सब कहँ, झूलहिं झूल हिंडोला ॥ २ ॥
लागत नाहिं राम तें भागत, तजि कै नाम अमोला।
ह्वै गे अस्त उदय है नाहीं, ज्यौं पानी क बबूला ॥ ३ ॥
परपंचो परपंच करहिं जे, परा ते भव प्रतिकूला।
जगजीवन एहि देखि तमासा, सतगुर छबि गहि मूला ॥ ४ ॥

॥ शब्द २४ ॥

सब जग दीन्ह धन्धे लाय ॥ टेक ॥
जहाँ तहाँ लगाय धागा, सुद्धि गई भुलाय।
जारि डारि संसार माया, लीन्ह सबहिं बिरुझाय[2] ॥ १ ॥
बिना दाया नाहिं छूटै, करै कोटि उपाय।
पाँच और पचीस मिलि कै, अपथ गैल चलाय ॥ २ ॥
चुभे पाँवन कर्म काँटा, दरद भे अधिकाय।
गये गल पचि नाम बिनु बहि, ज्यौं बुल्ला बुन्द बिलाय ॥ ३ ॥

(१) बिताते हैं। (२) ऐसा उलझना कि फिर न छूटे।

करि कृपा मन खैंचि लीन्ह्यो, राखि लइ सरनाय।
जगजीवन सोइ भयो निर्भय, काल तें न डेराय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २५ ॥

भे जे नाम भजि मस्तान।
सदा लागी रहत तारी नाहिं सूझत आन ॥ १ ॥
दीनता गहि सीस वारे तजे गर्व गुमान।
अबल कोऊ कहै नहिं तेहिं महा है बलवान ॥ २ ॥
काल तिन तें करत बिनती रहत सदा हैरान।
कहत सब्द पुकारि कै सुनि मानि ले परमान ॥ ३ ॥
रहत नीचे तकत ठाढ़े जहँ सतगुर निर्बान।
जगजीवन गहि चरन मन तें, भये ताहि समान ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ ॥

कर मुकाम जहँ निर्गुन नाम।
ए मन बैठि रहौ तेहिं के ढिग, तबहीं सुख पैहौ बिस्राम ॥ १ ॥
उत्तम मध्यम तहँवाँ कछु नहिं, नाहिं छाँह नहिं आहै घाम।
पानि पवन उहँ भूख प्यास नहिं, नाहीं दुख नहिं अहै अराम ॥ २ ॥
झलमल निर्मल निरख देखु तहँ, उत्तम बना गगन भल ग्राम।
जगजीवन डर नाहिं काल का, सतगुर चरन तें राखहु काम ॥३॥

॥ शब्द २७ ॥

मन महँ समुझि भजहु रे भाई।
बिना नाम नाहीं सुख पैहौ, छाँड़ि देहु गफिलाई ॥ १ ॥
बादसाह तख्त चढ़ि भूला, सूबा करत सुबाई।
राजा राज-काज महँ भूला, कबहुँ न बंदगी आई ॥ २ ॥
साहूकार दाम तकि भूला, दाया जिन्ह बिसराई।
साँईं खैंचि लीन्ह सब माया, जहँ तहँ गयो बिलाई ॥ ३ ॥
जोगी जोग जुक्ति महँ भूला, पँडित करि पँडिताई।
भोगी भोग पाप महँ भूला, सुधि बुधि गै बिसराई ॥ ४ ॥

तपसो करत तपस्या भूला, मनुवाँ कसा न जाई ।
पाँच साँचु माँ आवत नाहीं, मिले बबूरिहिं[1] जाई ॥ ५ ॥
षट-दरसन दुनियाँ सब भरमत, जहँ तहँ तीरथ न्हाई ।
घटत न कर्म रहत अघ लादे, मन का मैल न जाई ॥ ६ ॥
बिना नाम कोइ पार न पाइहि, कहे देत गोहराई ।
जगजीवन सतगुर के चरनन, कबहुँ न मन बिसराई ॥ ७ ॥

॥ शब्द २८ ॥

अरे मन अंते कतहुँ न धाव ।
रहै अंतर प्रीति लागी, जग्त सब बिसराव ॥ १ ॥
तीन चौथ बनाय दीन्ह्यौ, नाहिं जान्यौ भाव ।
पाय औसर चुकु नाहीं, इहै आहै दाव ॥ २ ॥
तीर्थ ब्रत और दान पुन्यं, एह न मन में लाव ।
एइ सब अहैं गुलाम भक्त के, सीस नाहीं नाव ॥ ३ ॥
त्यागु सबंस आस मन तें, गगन गाँव बसाव ।
जगजिवनदास निहारि मूरति, नयन दरसन पाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द २९ ॥

जो कोइ यहि बिधि तीरथ न्हाय ॥ टेक ॥
मन का मैल लेइ मिसाय[2], तब तिरबेनी घाट अन्हाय ॥ १ ॥
माया मोह दान दै डारि, काम क्रोध मद देइ लुटाय ॥ २ ॥
काहे क कासी गंगहिं जाय, नाम तें मैलहिं डार छुड़ाय ॥ ३ ॥
जगजीवन दास कहै गोहराय,
बिन सतगुरु कोउ पार न जाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३० ॥

ऐसी डोरि लगावहु पोढ़ि । टूटै डोरि लेहु फिरि जोरि ॥ १ ॥
जब लगि मुख तें कहिये बात ।

(१ बबूल यानी काँटे में । (२) उबटन लगा कर साफ़ करना ।

तब लगि नाम बिसरि मन जात ॥ २ ॥
जग प्रपंच संगति नहिं करिये।
हिये नाम की रटना धरिये ॥ ३ ॥
चित माँ चित जो राखै लाय।
ता पर काल कि कछु न बसाय ॥ ४ ॥
जगजीवन के चरन अधार। सतगुरु संत उतारहिं पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

बिन वहि नाम तरै कोउ नाहीं।
देखहु समुझि बूझि मन माहीं ॥ १ ॥
तीरथ ब्रत बहु भाँति कराय।
जो पै अन्तर देखि न पाय ॥ २ ॥
जल तन धोय मैलि गा धोय।
मन यहु नाम तें निर्मल होय ॥ ३ ॥
भले करि षट कर्म अचार। याही तें भूला संसार ॥ ४ ॥
सहज डोरि जो राखै लाय। अंतर भजि तब भक्त कहाय ॥ ५ ॥
झूठ साँच बहुत नहिं बोलै। रहि जग अपने मारग डोलै ॥ ६ ॥
रहै छिपित नहि देइ जनाय। तब भजि अंतर भक्त कहाय ॥ ७ ॥
गर्ब गुमान त्यागि चलै चालू। दुख तेहिं देइ न कबहुँ कालू ॥८॥
जगजीवन निर्मल निर्बान। सतगुरु चरन रहै धरि ध्यान ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

मनुवाँ रहहु जिकिरि लगाय।
और आस न राखु एकौ, देहु सब बिसराय ॥ १ ॥
कथा ग्रंथ पुकारि भाषैं, देत संत सिखाय।
नाहिं एहि तें कछू उत्तम, त्यागि दे भ्रमताय ॥ २ ॥
तीन त्यागहु चलो चौथे, सहर अजब बनाय।
राति नहिं तहँ दिवस नाहीं, अजब दिस्त सुहाय ॥ ३ ॥

बैठि गुरु सत तख्त पर, तहँ रहो सीस नवाय ।
जगजीवन तहँ निरखि निर्मल, बरनि नाहीं जाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

सत्त नामं तत्त निर्मल, सुमिरहु मन लाइ ।
करै जाय अनेग कोइ कछु, अवर नहिं समताइ ॥ १ ॥
दान पुन्यं जज्ञ ब्रत तप, तिरथ कोटि अन्हाइ ।
पार नहिं वहि नाम बिनु, सत सब्द भाषत गाइ ॥ २ ॥
पढ़ै कोउ पुरान पाठं, ज्ञान कथि कबिताइ ।
किरति परगट कहन कहिये, नाहिं यह भगताइ ॥ ३ ॥
जानि छानि जिन नाम रसना, अनत ना चित जाइ ।
जगजिवन दास ते भक्त भे, गुरु चरन रहे लिपटाइ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

ए मन जोगी बैठि मढ़ी जपु राम ।
करता की गति काहु न पाई ।
नौ खिरकी दस दियो बनाई ॥ १ ॥
तीरथ ब्रत कहँ कतहुँ न धाव । नेम अचार बिचार बहाव ॥ २ ॥
पचीस जोगिनी चेला पाँच । तिन पर रहै आपनी आँच ॥ ३ ॥
जगन्नाथ तैं अपनै जानु । काया कासी और न आनु ॥ ४ ॥
प्राग प्रान तिरबेनी बास । और न दूजी राखहु आस ॥ ५ ॥
अजबै मढ़ी बनी चौगान । दृढ़ आसन निरखहु निर्बान ॥ ६ ॥
अमी नीर ले नैन तें पाइ । कर्म भर्म अघ सब मिटि जाइ ॥ ७ ॥
जगजीवन यह मति अनुरागु ।
आदि अंत गुरु चरनन लागु ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

सुमिरहु मन राम नाम चित लाइ ।
बिन वहि नाम नाहिं कोउ तरिहै, कहत अहौं गोहराइ ॥ १ ॥

जज्ञ दान ब्रत तीर्थ तपस्या, जग्त भर्म सब आइ[1] ।
बाहर ढूँढ़े नहिं कछु मिलिहै, रहु अंतर ठहराइ ॥ २ ॥
धावहु ना कहुँ आवहु थिर ह्वै, बाहर फिकिर बहाइ ।
कर परतीत रीत संतन की, मिलिहैं तबहीं साँइँ ॥ ३ ॥
कहे सुने नहिं भटकसि कबहूँ, जग्त बदी अधिकाइ ।
सिखि पढ़ि सुनि कै बातैं बहुती, भजन मनहिं बिसराइ ॥ ४ ॥
रहु जानत मन नाहिं जनावहु, रहहु अभेष छिपाइ ।
जगजीवन सतगुरु काँ निरखहु, चरन रहहु लिपटाइ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

सतगुरु तुम मोहिं सिखायो । सो सिखि मैं सोई गायो ॥ १ ॥
अब मोहिं आपन करि लीन्हा । मैं सीस चरन तर दीन्हा ॥ २ ॥
मैं आदि अंत का आऊँ[2] । अब सुमिरत आहूँ नाऊँ ॥ ३ ॥
एहि कठिन नदी है धारा । तुम अब कि उतारहु पारा ॥ ४ ॥
जगजीवन दास तुम्हारा । मैं सीस चरन पर वारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

साधो का कहि सब्द सुनावै ।
सब्द है साँच माँच[3] कहि भाषै, काहु के मन नहिं आवै ॥ १ ॥
जग सब अंध कुमारग डोलहि, चेत हेत नहिं लावै ।
हिय कठोर पाषान अहै बहु, नाहीं सब्द समावै ॥ २ ॥
भेख अलेख[4] बहुत है दुनियाँ, करि कै स्वाँग दिखावै ।
आसा झूँठ लाय सब बाँधा, नाहिं निरंतर गावै ॥ ३ ॥
कोई तीरथ बरत तपस्या, जहाँ तहाँ कहँ धावै ।
जल पषान की आहे पूजा, भ्रमि भ्रमि जन्म गँवावै ॥ ४ ॥
अजपा जपत रहै बिन जिभ्या, कबहुँ नाहिं बिसरावै ।
जगजीवन पहुँचा चौथे पद, गुरु कहँ सीस नवावै ॥ ५ ॥

---

(१) है । (२) हूँ । (३) सच मुच । (४) बेहिसाब ।

॥ शब्द ३८ ॥

नाम मंत्र सम नाहीं कोय । प्रगट पुकारि कहत हौं सोय ॥ १ ॥
अंतर डोरी राखहु लाय । सोवत जागत बिसरि न जाय ॥ २ ॥
बोलहु नाहिं बहुत बतलाहु । अंतर भजि ले याहै लाहु[1] ॥ ३ ॥
जो पै कोटिउ तिरथ अन्हाय । मन का मैल तबहूँ नहिं जाय ॥४॥
करै तपस्या तन काँ जारी । नाम बिना गै सबै बिगारी ॥ ५ ॥
दूध पियहि तस मूरिहि खाय । भावै घर माँ खाय अघाय ॥ ६ ॥
जगजीवन बिस्वास बस राम ।
तेहि कौ सुफल सिद्ध भा काम ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

राम क भजन करहु मन माहीं ।
जीवन जन्म सुफल जल माहीं ॥ १ ॥
भूलहु नाम न तब सुख पाय ।
राम मंत्र सुमिरहु मन लाय ॥ २ ॥
बिनु सुमिरन गति मुक्ति न होय ।
सब्द सत्य कहि भाखत सोय ॥ ३ ॥
सुमिरत ब्रह्मा सुमिरत सेस । सुमिरत गौरी और गनेस ॥ ४ ॥
सुमिरत बिस्नु जोति मन जानी ।
निर्गुन निर्मल सो पहिचानी ॥ ५ ॥
जगजीवन सतगुरु कौ ध्यान ।
निसु दिन रहौं चरन लिपटान ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४० ॥

सत मत कहत अहौं सुनाइ ।
तत्त सार बिचार कीन्हौ नाम रटना लाइ ॥ १ ॥
बेद ग्रंथन छानि लीन्ह्यो भर्म नाहिं भुलाइ ।
बैठि दृढ़ ह्वै जुक्ति माहीं आस सब बिसराइ ॥ २ ॥
नाम की गति कहौं कहँ लौं सेस संभू गाइ ।

(१) लाभ ।

करत बरनन ब्रह्म मन महँ बेद परगट गाइ ॥ ३ ॥
तीनि त्यागै साध जन कोइ चौथ का घर पाइ ।
जगजीवन गुरु चरन गहि कै बैठु थिर ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

मन महँ जाइ फकीरी करना ।
रहै एकंत तंत तें लागा, राग निर्त नहिं सुनना ॥ १ ॥
कथा चारचा पढ़ै सुनै नहिं, नाहिं बहुत बक बोलना ।
ना थिर रहै जहाँ तहँ धावै, यह मन अहै हिंडोलना ॥ २ ॥
मैं तैं गर्ब गुमान बिबादहिं, सबै दूर यह करना ।
सीतल दीन रहै मरि अंतर, गहै नाम की सरना ॥ ३ ॥
जल पषान की करै आस नहिं, आहै सकल भरमना ।
जगजीवन दास निहारि निरखि कै,
गहि रहु गुरु की सरना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

साधो सुमिरहु नाम रसाला ।
बकबादी बेबादी[1] निंदक । तेहि का मुँह करु काला ॥ १ ॥
साखी सब्द जोरि कै लीन्ह । जहाँ तहाँ लै झगरा कीन्ह ॥ २ ॥
भजहीं नाहिं बकहि अधिकार । बाझि रहे माया के जार ॥ ३ ॥
सूकर स्वान बुद्धि तेहिं आइ[2] । नहिं उद्धार नर्क परै जाइ ॥ ४ ॥
करहीं बहुत गरब अभिमान ।
ता तें बिसरि गयो वह ज्ञान ॥ ५ ॥
भेष अलेख अंत कछु नाहीं । तिन तो गर्ब करैं मन माहीं ॥ ६ ॥
करि दिनताय नवै सिर नाइ ।
तबहिं सुमति कछु उपजै आइ ॥ ७ ॥
जगजीवन दास देत उपदेस । नाम भजहु तब मिटै अँदेस ॥ ८ ॥

---

(१) बिबादो । (२) है ।

॥ शब्द ४३ ॥

अन्तर सुमिरहु नामहीं बिसरावहु नाहीं।
मूल मंत्र ईहै अहै बसि रहु तेहिं माहीं ॥ १ ॥
देखहु दृष्टि पसारि कै कोऊ थिर नाहीं।
नोरहिं तें पैदा भये फिर खाक मिलाहीं ॥ २ ॥
कर्म फाँस सब जग परचो कोउ छूटत नाहीं।
छूटे कोउ कोउ दास जन जुक्ती जिन माहीं ॥ ३ ॥
डोरी पोढ़ि लगाइ कै सतगुरुहिं मिलाहीं।
जगजीवन अस निरखि कै चरनन लिपटाहीं ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

ए मन नामहिं सुमिरत रहौ।
परगट भेद न काहू कहौ ॥ १ ॥
परगट कहे नाहिं भल होइ।
सुमिरन मन तें जाइह खोइ ॥ २ ॥
परपंची निंदक तें दूरी।
तब सुभ भजन होइ भरपूरी ॥ ३ ॥
बकवादो बीबादी त्यागू।
सत्त सुकृत नामहिं में लागू ॥ ४ ॥
यहि तें सुख नाहीं अधिकारा।
कहै पुरान औ ज्ञान बिचारा ॥ ५ ॥
सबहिन कहा पिया सो जिया।
जिन केहु भक्ति माँगि कै लिया ॥ ६ ॥
सतगुरु के चरनन लिपटाना।
साधू सोई भे निरबाना ॥ ७ ॥
जगजीवन करि प्रगट बखान।
गुरु के चरन तजि भजहु न आन ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

इत उत आसा देहु त्यागि।
सत्त सुकृत तें रहहु लागि ॥ १ ॥
मन तुम नाम रटहु रट लाइ।
रहु सचेत नहिं बिसरि जाइ ॥ २ ॥
काया भीतर तीरथ कोटि।
जानि परत नहिं मन की खोटि ॥ ३ ॥
ठाढ़े बैठे पग चलाइ।
तस पौंढ़े[1] चित अनत न जाइ ॥ ४ ॥
रात दिवस धुनि छूटै नाहिं।
ऐसे जपत रहहु मन माहिं ॥ ५ ॥
गगन पवन गहि करहु पयान।
तहवाँ बैठि रहहु निरबान ॥ ६ ॥
गुरु के चरन गहहु लिपटाइ।
निरखहु सूरति सीस उठाइ ॥ ७ ॥
या है ब्यापि रहे सब माहिं।
देखत न्यारा कतहूँ नाहिं ॥ ८ ॥
जगजीवन कहि मथि पुरान।
यहि तें सत मत और न आन ॥ ९ ॥

———

॥ समाप्त ॥

(१) लेटे।

॥ राधास्वामी ॥
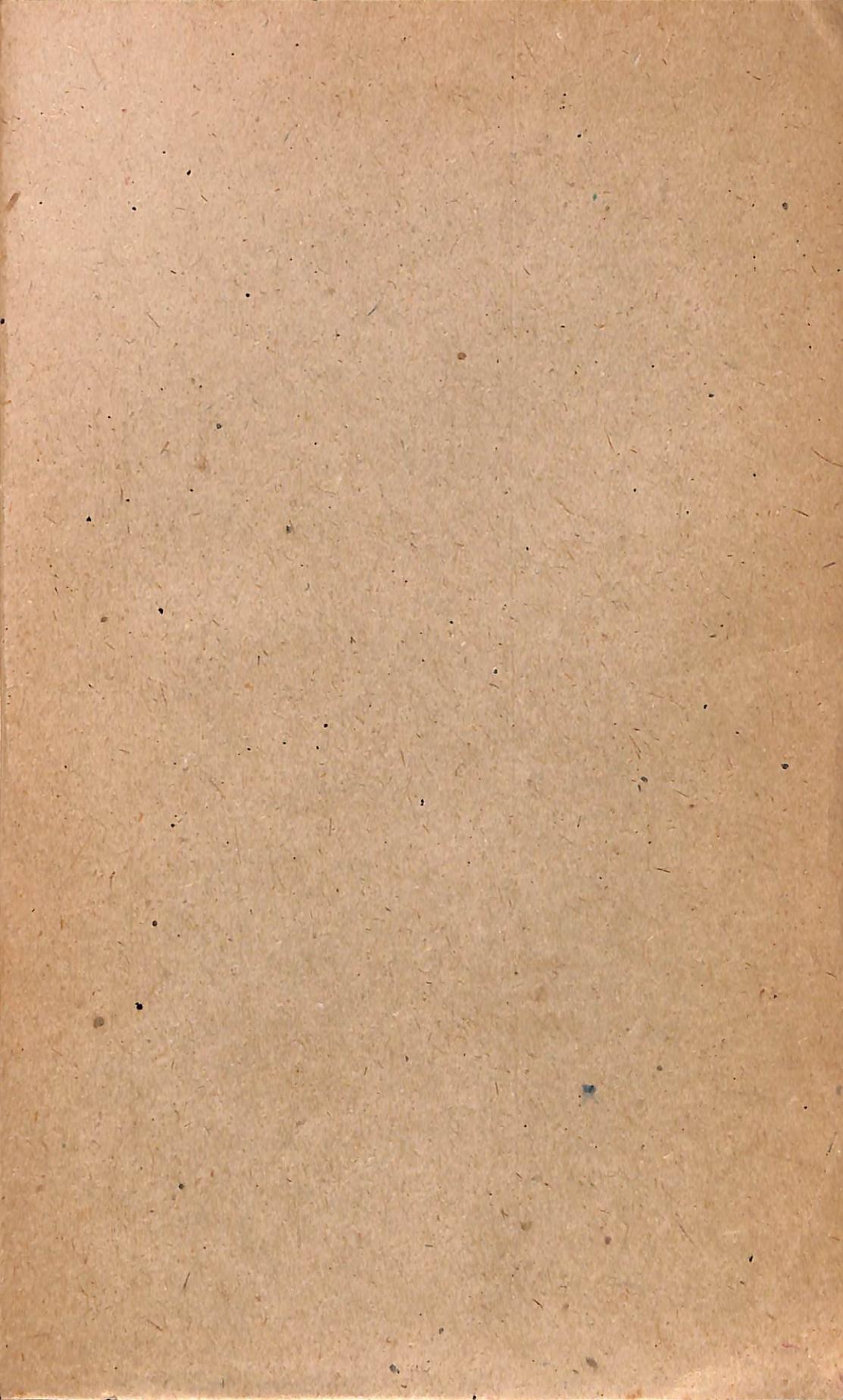
संतबानी की संपूर्ण पुस्तकों का संशोधित सूचीपत्र, १९८

गुरु नानक की प्राण संगली भाग १ ८)
गुरु नानक की प्राण संगली भाग २ ८)
संत महात्माओं का जीवन चरित्र संग्रह ४)
कबीर साहिब का अनुराग सागर ६)
कबीर साहिब का बीजक ६)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह १०)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग १ ५)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग २ ५)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग ३ ३)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग ४ २)
कबीर सा० की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते, झूलने ३)
कबीर साहिब की अखरावती २)
धनी धरमदास जी की शब्दावली ५)
तुलसी सा० हाथ० की शब्दावली भाग १ ८)
तुलसी सा० भाग २ पद्मसागर सहित ८)
तुलसी साहिब का रत्नसागर ८)
तुलसी साहिब का घटरामायण भाग १ १०)
तुलसी साहिब का घटरामायण भाग २ १०)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी" १३)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द" ८)
सुन्दर बिलास ८)
पलटू साहिब भाग १—(कुण्डलियां) ५)
पलटू सा० भाग २—(रेखते, झूलने) आदि ५)
पलटू सा० भाग ३—(भजन, साखियां) ५)
जगजीवन साहिब की बानी भाग १ ६)
जगजीवन साहिब की बानी भाग २ ६)
दूलनदास जी की बानी २)
चरनदास जी की बानी, भाग १ ५)
चरनदास जी की बानी, भाग २ ५)

गरीबदास जी की बानी
रैदास जी की बानी
दरिया साहिब बिहार (दरिया सागर)
दरिया साहिब के चुने पद और साखी
दरिया साहब मारवाड़ वाले की बानी
भीखा साहिब की शब्दावली
गुलाल साहिब की बानी
बाबा मलूकदास जी की बानी
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी
यारी साहिब की रत्नावली
बुल्ला साहिब का शब्दसार
केशवदास जी की अमीघूंट
धरनीदास जी की बानी
मीराबाई की शब्दावली
सहजोबाई का सहज-प्रकाश
दयाबाई की बानी
संतबानी संग्रह, भाग १ (साखी) १
संतबानी संग्रह भाग २ (शब्द) १
लोक परलोक हितकारी

संत महात्माओं के चित्र

संत तुलसीदास
कबीर साहब
दादू दयाल
मीराबाई
दरिया साहब
मलूकदास
तुलसी साहब हाथरस वाले
गुरु नानक

पुस्तकें मंगवाने के नियम

पुस्तकों के दाम में डाक-महसूल, रजिस्ट्री, पैकिङ्ग और मनीआर्डर फीस शामिल नहीं वह अलग से लिया जायेगा। पुस्तकों के आर्डर के साथ आधी रकम पेशगी मनीआर्डर से भेज अति आवश्यक है। मनीआर्डर कूपन पर पूरा नाम, पता, डाकखाना, मुकाम व जिला साफ-स हरफों में लिखें तथा जो पुस्तक मँगाना हो उसका नाम व संख्या भी अवश्य लिखें। यदि अ पुस्तकें मँगवाना हो तो अपने पास के रेलवे स्टेशन का नाम अवश्य लिखें। पोस्ट आफिस ५ दि अधिक वी० पी० नहीं रोकता। इसलिये पोस्टआफिस से सूचना मिलते ही वी० पी० शीघ्र छ लेना चाहिये।

फोन नं० ५१५

पता :—मैनेजर, बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स
(विश्वविद्यालय के सामने) १३, मोतीलाल नेहरू रोड, प्रयाग